संत श्री आशारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित

मासिक पत्रिका

मूल्य : ₹ ६ भाषा : हिन्दी
प्रकाशन दिनांक : १ जून २०१५
वर्ष : २४ अंक : १२
(निरंतर अंक : २७०)
पृष्ठ संख्या : ३२+४
(आवरण पृष्ठ सहित)

संत-समाज, वरिष्ठ न्यायविदों, प्रसिद्ध हस्तियों और करोड़ों महिलाओं व नागरिकों की माँग...

पूज्य बापूजी के मूलभूत संवैधानिक अधिकारों व मानवाधिकारों का रक्षण होना चाहिए एवं उन्हें शीघ्र जमानत मिलनी चाहिए।

पूज्य संत श्री आशारामजी बापू

"प्रायः ट्रायल (विचारण) में कई वर्ष लग जाते हैं और अगर अभियुक्त को जमानत नहीं दी जाती व आखिर में वह निर्दोष छूट जाता है तो उसके जीवन के इतने वर्ष जो उसने जेल में बिताये, उन्हें कौन वापस कर सकता है ?"

– मा. सर्वोच्च न्यायालय

- बापूजी को जेल में भेजे पौने दो वर्ष। ७६ वर्ष की उम्र। लड़खड़ाती तबीयत।
- मा. सर्वोच्च न्यायालय द्वारा जमानत के लिए रखी शर्तें पूरी।
- बापूजी के देश एवं विश्व व्यापी सेवाकार्यों व करोड़ों देशवासियों के उत्थान-कार्य में रुकावट।
- न कोई ठोस सबूत, न कोई मेडिकल आधार बल्कि षड्यंत्र में फँसाये जाने के अनेकों प्रमाण।

कल हमारे बापू निर्दोष बरी हो के आयेंगे तो इस बीच उनको जो प्रताड़ित किया गया, उसका जिम्मेदार कौन होगा ? – श्री श्री १०८ श्री नरेन्द्र गिरि महाराज, अध्यक्ष, अखिल भारतीय अखाड़ा परिषद

बापूजी को बहुत कष्ट दिया गया है। उन्हें जमानत मिलनी चाहिए। – श्री अशोक सिंहलजी, मुख्य संरक्षक व पूर्व अंतर्राष्ट्रीय अध्यक्ष, विहिप

पूज्य बापूजी को बेवजह परेशान न किया जाय। – श्री उद्धव ठाकरे, शिवसेना प्रमुख

बापूजी का मूलभूत अधिकार बनता है जमानत पर बाहर आने का ! – न्यायविद् डॉ. सुब्रमण्यम स्वामी

हिन्दू महासभा ने की बापूजी की रिहाई की माँग (पढ़ें पृष्ठ२९)

वर्ष २०१४-१५ में भी गुरुकुलों के बोर्ड परीक्षाओं में उत्कृष्ट परिणाम

१०वीं बोर्ड परीक्षा-परिणाम की झलकें (CGPA 10.0 में से)

ब्रजमोहन कुमार
जयपुर, १०.०

कीर्ति रघुवंशी
भोपाल, १०.०

भक्ति शर्मा
आगरा, १०.०

यश गुप्ता
भोपाल, १०.०

आयुष कुमार
जयपुर, १०.०

शालू यादव
आगरा, ९.८

शुभम परसारी
आगरा, ९.८

सुमित चौधरी
आगरा, ९.८

तरुण कुमार
आगरा, ९.८

आयुषी सिंह
जयपुर, ९.८

मौसम देशमुख
छिंदवाड़ा, ९.६

लक्षिता ताम्बी
जयपुर, ९.६

मेघा श्रीवास्तव
छिंदवाड़ा, ९.४

श्रेया लहाड़े
छिंदवाड़ा, ९.२

नम्रता साहू
छिंदवाड़ा, ९.०

भूषण ठाकरे
छिंदवाड़ा, ९.०

परमेश्वर सिंह
जयपुर, ९.०

अभिषेक ठाकुर
लुधियाना, ९०%

१२वीं बोर्ड परीक्षा-परिणाम की झलकें

हर्ष भवानी
आगरा, ८९.८%

सिद्धार्थ पांडे
आगरा, ८९%

दिनेश कुमार
आगरा, ८४.८%

अनिल पाल
भोपाल, ८३.८%

ऋषभ चौहान
आगरा, ८३.६%

राजेश बेदी
छिंदवाड़ा, ८१.६%

श्रद्धा गुप्ता
भोपाल, ८१.४%

जयश्री पटेल
छिंदवाड़ा, ८१.४%

जय कुमार
आगरा, ८१.२%

(ये अब तक प्राप्त परीक्षा-परिणाम हैं। अनेक गुरुकुलों के परीक्षा-परिणाम आना अभी बाकी है।)

अहमदाबाद आश्रम में हुए साधक-सम्मेलन में हुआ जपमाला-पूजन एवं लिया गया 'ऋषि प्रसाद विशेषांक' के व्यापक प्रचार द्वारा सुप्रचार करने का संकल्प

ऋषि प्रसाद सम्मेलनों में सुख, शांति एवं सद्ज्ञान को घर-घर तक पहुँचाने का संकल्प लेते दृढ़व्रती साधक

हरिद्वार में पलाश शरबत वितरण

हरिद्वार में हजारों साधुओं में भंडारा तथा सामग्री एवं दक्षिणा वितरण

ऋषि प्रसाद

हिन्दी, गुजराती, मराठी, उड़िया, तेलुगू, कन्नड़, अंग्रेजी, सिंधी, सिंधी देवनागरी व बंगाली भाषाओं में प्रकाशित

वर्ष : २४ अंक : १२ मूल्य : ₹ ६
भाषा : हिन्दी (निरंतर अंक : २७०)
प्रकाशन दिनांक : १ जून २०१५
ज्येष्ठ-अधिक आषाढ़
वि.सं. २०७२

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम
प्रकाशक और मुद्रक : श्री कौशिकभाई पो. वाणी
सम्पादक : श्री कौशिकभाई पो. वाणी
सहसम्पादक : डॉ. प्रे. खो. मकवाणा, श्रीनिवास
संरक्षक : श्री जमनालाल हलाटवाला
प्रकाशन स्थल : संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद -३८०००५ (गुजरात)

सदस्यता शुल्क (डाक खर्च सहित)

भारत में
(१) वार्षिक : ₹ ६० /-
(२) द्विवार्षिक : ₹ १००/-
(३) पंचवार्षिक: ₹ २२५/-
(४) आजीवन : ₹ ५००/-

नेपाल, भूटान व पाकिस्तान में (सभी भाषाएँ)
(१) वार्षिक : ₹ ३०० / -
(२) द्विवार्षिक : ₹ ६०० / -
(३) पंचवार्षिक: ₹ १५००/-

अन्य देशों में
(१) वार्षिक : US $ २०
(२) द्विवार्षिक : US $ ४०
(३) पंचवार्षिक : US $ ८०

ऋषि प्रसाद (अंग्रेजी)

	वार्षिक	द्विवार्षिक	पंचवार्षिक
भारत में	७०	१३५	३२५
अन्य देशों में	US $ 20	US $ 40	US $ 80

सम्पर्क
'ऋषि प्रसाद', संत श्री आशारामजी आश्रम, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुज.).
फोन : (०७९) २७५०५०१०-११, ३९८७७७८८.
e-mail: ashramindia@ashram.org
web-site : www.rishiprasad.org
www. ashram.org

इस अंक में

बापूजी ने जीने का सही ढंग सिखाया, जीवन का उद्देश्य समझाया

नींद खुलते ही तुरंत मत उठो

प्रातः जागरण जैसा होता है, वैसा पूरा दिन गुजरता है । जागरण के समय को भगवन्मय बना लिया तो पूरा दिन आनंदमय बन जायेगा । शरीर को स्वस्थ, मन को प्रसन्न तथा जीवन को रसमय, आनंदमय बनाकर परमात्मप्राप्ति की सुंदर युक्ति पूज्य बापूजी ने बतायी है : ''नींद पूरी होती है, उस समय विश्रांति में होते हैं, स्फुरण नहीं होता । फिर धीरे से रसमय स्फुरण होता है, प्रगाढ़ स्फुरण होता है, फिर संकल्प होता है और संसार की दौड़-धूप में हम लगते हैं । अतः सुबह नींद में से चटाक्-से मत उठो, पटाक्-से घड़ी मत देखो । नींद खुल गयी, आँख न खुले, आँख खुल जाय तो तुरंत बंद कर दो, थोड़ी देर पड़े रहो । फिर जहाँ से हमारी मनःवृत्ति स्फुरित होती है, उस चैतन्यस्वरूप परमात्मा में, उस निःसंकल्प स्थिति में शांत हो जाओ । एक से दो मिनट कोई संकल्प नहीं । फिर जैसे बच्चा माँ की गोद से उठता है, कैसा शांत ! ऐसे हम परमात्मा की गोद से बाहर आयें : 'ॐ शांति... प्रभु की गोद से मैं बाहर आ रहा हूँ । मेरा मन बाहर आये उससे पहले मैं फिर से मनसहित प्रभु के शांतस्वरूप, आनंदस्वरूप में जा रहा हूँ, ॐ शांति, ॐ आनंद...' ऐसा मन से दोहराओ । आपका हृदय बहुत पवित्र होगा ।

आत्मशक्ति से शरीर, मन, बुद्धि को पुष्ट करो

फिर लेटे-लेटे शरीर को खींचो । २ मिनट खूब खींच-खींच के २ मिनट ढीला छोड़ो ताकि आत्मा की शक्ति तुम्हारे शरीर, मन और बुद्धि में ज्यादा-से-ज्यादा आये । बूढ़े शरीर खींचेंगे तो बुढ़ापे की कमजोरी ज्यादा नहीं रहेगी और बच्चे खींचेंगे तो जीवन उत्साह एवं स्फूर्ति से भर जायेगा । तत्पश्चात् बिस्तर में शांत बैठकर आत्मचिंतन करो : 'मैं पाँच भूतों से बना हुआ शरीर नहीं हूँ । जो सत् है, चित् है, आनंदस्वरूप है और मेरे हृदय में स्फुरित हो रहा है, जो सृष्टि की उत्पत्ति, स्थिति और संहार का कारण है और मेरे शरीर की उत्पत्ति, स्थिति और लय का कारण है, उस सच्चिदानंद का मैं हूँ और वे मेरे हैं । ॐ शांति, ॐ आनंद...' २-५ मिनट इस प्रकार तुम नींद में से उठ के शांत रहोगे तो मैं कहूँगा २ दिन की तपस्या से वे २ मिनट ज्यादा फायदा करेंगे, पक्की बात है !

अथवा आप यदि अपने जीवन में उन्नति

चाहते हो तो सुबह नींद से उठकर शांत हो के बैठ जाओ। 'भगवान मैं तुम्हारा हूँ, तुम मेरे हो' - ऐसा करके ५-७ मिनट बिस्तर पर ही बैठो। कुछ नहीं करना, सिर्फ इस बात को पकड़ के बैठ जाओ कि 'मैं भगवान का हूँ और भगवान मेरे हैं। ॐ शांति, ॐ आनंद...'

बुद्धि को मजबूत व प्रखर करने की युक्ति

बुद्धि को मजबूत करने के लिए सुबह उठो तो विचारो कि 'परमात्मा में से 'मैं' आया और मेरी मति व मन भी आया, अब इन्द्रियों के साथ हम भटकें नहीं इसलिए

प्रातः स्मरामि हृदि संस्फुरदात्मतत्त्वं
सच्चित्सुखं परमहंसगतिं तुरीयम्।
यत्स्वप्नजागरसुषुप्तिमवैति नित्यं
तद्ब्रह्म निष्कलमहं न च भूतसंघः ॥

'मैं प्रातःकाल हृदय में स्फुरित होते हुए आत्मतत्त्व का स्मरण करता हूँ, जो सत्, चित् और आनंदस्वरूप है, परमहंसों का प्राप्य स्थान है और जाग्रत आदि तीनों अवस्थाओं से विलक्षण 'तुरीय' है। जो स्वप्न, सुषुप्ति और जाग्रत अवस्था को नित्य जानता है, वह स्फुरणरहित ब्रह्म ही मैं हूँ; पंचभूतों का संघात (शरीर) मैं नहीं हूँ।'

प्रातः हम उसी परमेश्वर का स्मरण करते हैं जो वासुदेव है। इन्द्रियाँ मन में गयीं, मन बुद्धि में गया, बुद्धि जीवत्व में गयी और जीवत्व मेरे परमात्मा में डूब के आया है। जैसे कोई चीज फ्रिज में रखते हैं तो उसमें शीतलता आती है, ऐसे ही परमात्मा के निकट गये तो मेरे तन, मन, इन्द्रियों को शांति मिली और उसीके स्फुरण से मन स्फुरित हुआ तथा इन्द्रियाँ बहिर्मुख हुई हैं। मैं उस परमात्मा का स्मरण करता हूँ। मेरी बुद्धि में अपना सत्त्व दें परमेश्वर!

असतो मा सद्गमय। मुझे असत्य आसक्तियों, असत्य भोगों से बचाओ। तमसो मा ज्योतिर्गमय। यह करूँगा तो सुखी, यह भोगूँगा तो सुखी... यह अंधकार है। शरीर को 'मैं' मानना, संसार को 'मेरा' मानना - इस अंधकार-अज्ञान से बचाकर मुझे आत्मप्रकाश दो। मृत्योर्मा अमृतं गमय। मुझे बार-बार जन्मना और मरना न पड़े ऐसे अपने अमरस्वरूप की प्रीति और ज्ञान दे दो। ओ मेरे सद्गुरु ! हे गोविंद ! हे माधव !...' भगवान का कोई भी नाम लो। ऐसे भगवान से सुबह थोड़ी देर प्रार्थना करके शांत हो जाओ। इससे बुद्धि में सत्त्व बढ़ेगा और बुद्धि मजबूत रहेगी, मन की गड़बड़ से मन को बचायेगी और मन इन्द्रियों को नियंत्रित रखेगा।''

सुबह उठकर पाँच आहुतियाँ दें

५ क्लेश व्यक्ति को जन्म-मरण के चक्कर में भटकाते हैं, इनको दूर करने का सरल उपाय तत्त्ववेत्ता पूज्य बापूजी बताते हैं : ''आपकी नाभि जठराग्नि का केन्द्र है। अग्नि नीचे फैली रहती है और ऊपर लौ होती है। तो जठराग्नि की जगह पर त्रिकोण की भावना करो और चिंतन करो, 'अविद्यमान वस्तुओं को, अविद्यमान परिस्थितियों को सच्चा मनवाकर जो भटकान कराती है, उस अविद्या को मैं जठराग्नि में स्वाहा करता हूँ : अविद्यां जुहोमि स्वाहा। अस्मिता है देह को 'मैं' मानना। तो अस्मितां जुहोमि स्वाहा। 'मैं अस्मिता को अर्पित करता हूँ।' रागं जुहोमि

अस्मिता को अर्पित करता हूँ ।' रागं जुहोमि स्वाहा । 'मैं राग को अर्पित करता हूँ ।' द्वेषं जुहोमि स्वाहा । 'द्वेष को भी मैं अर्पित करता हूँ ।' फिर आखिरी, पाँचवाँ क्लेश आता है अभिनिवेश - मृत्यु का भय । मृत्यु का भय रखने से कोई मृत्यु से बचा हो यह मैंने आज तक नहीं देखा-सुना, अपितु ऐसा व्यक्ति जल्दी मरता है । अतः अभिनिवेशं जुहोमि स्वाहा । 'मृत्यु के भय को मैं स्वाहा करता हूँ ।'

शशकासन (मत्थाटेक कार्यक्रम) का लाभ लें

फिर अपने भगवान या सद्गुरुदेव को मन-ही-मन प्रेमपूर्वक प्रणाम करें और उनका मानस-पूजन करें । तत्पश्चात् शशकासन में भगवान से प्रार्थना करनी चाहिए : 'हे भगवान ! मैं आपकी शरण में हूँ । आज के दिन मेरी पूरी सँभाल रखना । दिनभर सद्बुद्धि बनी रहे । मैं निष्काम सेवा और तुझसे प्रेम करूँ, सदैव प्रसन्न रहूँ, आपका चिंतन न छूटे...'

शशकासन सभीको कम-से-कम २ मिनट और बच्चे-बच्चियों व महिलाओं को ३ मिनट करना ही चाहिए ।'' (क्रमशः)

संत वाणी

संत कबीरजी कहते हैं :

गुरु नारायन रूप है, गुरु ज्ञान को घाट ।
सतगुरु बचन प्रताप सों, मन के मिटे उचाट ॥

गुरु साक्षात् भगवान नारायण का स्वरूप हैं और वे ही अज्ञानवश भवसागर में गोते खा रहे अज्ञानियों के लिए ज्ञानरूप भवतारक किनारा हैं । सद्गुरु-वचन के प्रभाव से मन के सारे संदेहों का निवारण हो जाता है ।

गुरु शरणागति छाँड़ि के, करै भरोसा और ।
सुख सम्पत्ति की कह चली, नहीं नरक में ठौर ॥

गुरु की शरणागति को छोड़कर जो अन्य पर भरोसा करता है, उसकी सुख-सम्पदा की हालत कौन बताये, उसे नरक में भी ठौर-ठिकाना नहीं मिलेगा ।

(पुरुषोत्तम/अधिक मास : १७ जून से १६ जुलाई)

पुरुषोत्तम मास में जो जप, सत्संग, ध्यान, पुण्य आदि करेंगे, उन्हें विशेष फायदा होगा । अंतर्यामी आत्मा के लिए जो भी कर्म करेंगे, वह विशेष फलदायी हो जायेगा । 'देवी भागवत' के अनुसार यदि दान आदि का सामर्थ्य न हो तो संतों-महापुरुषों की सेवा (उनके दैवी कार्यों में सहभागी होना) सर्वोत्तम है । इससे तीर्थ, तप आदि के समान फल प्राप्त होता है ।

(विस्तृत लेख पढ़ें ऋषि प्रसाद, मई २०१५,)

ऋषि प्रसाद प्रश्नोत्तरी

नीचे दिये गये रिक्त स्थानों की पूर्ति करने के लिए इस अंक को ध्यानपूर्वक पढ़िये । उत्तर अगले अंक में प्रकाशित किये जायेंगे ।

(१) धनभागी हैं वे लोग, जिन्हें .... गुरुओं का ज्ञान मिल जाता है !

(२) ईश्वर मिलेगा तो .... की निवृत्ति से ही मिलेगा ।

(३) यदि संत न होते तो ...... कोई नहीं जानता ।
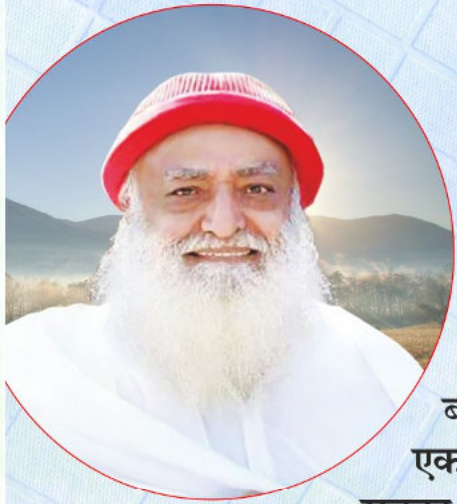
जोधपुर न्यायालय परिसर में पूज्य बापूजी द्वारा दिये गये संदेशों के अंश

चैनलवाले : ''हरि ॐ बापूजी ! कोई संदेश ?''

पूज्य बापूजी : ''सहयोग, परस्पर सहयोग... परस्परं भावयन्तु... शास्त्र बोलते हैं। मनुष्य एक-दूसरे को सहयोग दे के चले तो पृथ्वी स्वर्ग हो जायेगी। एक-दूसरे को सहयोग देवें, अपना और देश का मंगल हो। सबका मंगल, सबका भला। निंदा किसीकी हम किसीसे भूलकर भी ना करें।''

चैनलवाले : ''आप मन की जो बात है, वह बता ही दीजिये।''

पूज्यश्री : ''मन की बात यह है कि परिस्थिति कैसी भी आये, उसके साथ सत्-बुद्धि मत करो। 'सत्' तुम्हारा आत्मा है, वह अमर है, चैतन्य है। किसीका बुरा सोचो मत, किसीका बुरा चाहो मत, किसीका बुरा करो मत। बदले में कुछ भी मिले, हँसते-हँसते उसके सिर पर पैर रख के मुक्तात्मा हो जाओ, महान आत्मा हो जाओ।''

चैनलवाले : ''तबीयत कैसी है बापू ?''

पूज्यश्री : ''तबीयत नरम-गरम होती रहती है। पुरानी गाड़ी, पुराना मकान, पुराना शरीर पुचकार के चलाना पड़ता है। ७६ साल की उम्र है। ट्राइजेमिनल न्यूराल्जिया... (चिकित्सा विज्ञान भी स्वीकार करता है कि) इससे बड़ी तो कोई पीड़ा नहीं है। शरीर का हाल जरा ऐसा-वैसा है लेकिन गुरु का ज्ञान तो जोरदार है !''

बदला कहा गुरु कूँ दीजै

- संत सहजोबाई

गुरु की अस्तुति[1] कहँ लौं[2] कीजै।
बदला कहा गुरु कूँ दीजै ॥
गुरु का बदला दिया न जाई।
मन में उपजत है सकुचाई ॥
इन नैनन जिन राम दिखाये।
बंधन कोटि काटि मुक्ताये ॥
अभय दान दीनन कूँ दीन्हे।
देखत आप सरीखे कीन्हे ॥
गुरु की किरपा अपरम्पारै।
गुन गावत मम रसना हारै ॥
सेस सहस मुख[3] निसदिन गावै।
गुरु अस्तुति का अंत न पावै ॥
मौन गहूँ अस्तुति कहा करूँ।
बार बार चरनन सिर धरऊँ ॥
चरनदास महिमा अधिकाई।
सरबस[4] वारै[5] सहजोबाई ॥

१.स्तुति २. तक ३. शेष अपने सहस्र मुखों से ४. सर्वस्व ५. न्योछावर करना

****

जमानत मौलिक अधिकार है

माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने कहा है कि भारत में एक व्यक्ति की औसत आयु ६५ वर्ष है तथा वृद्धावस्था जमानत देने के लिए प्रासंगिक एवं महत्त्वपूर्ण है, जैसा कि २००९ (११) एस.सी.सी. ३६३ एवं अन्य निर्णयों में कहा गया है ।

अपने देश में हजारों विचाराधीन बंदी विचारण (ट्रायल) के समाप्त होने की प्रतीक्षा में वर्षों से जेल में हैं। स्टेट ऑफ केरल बनाम रनीफ (२०११ (१) एस.सी.सी. ७८४) में सर्वोच्च न्यायालय ने स्वीकार किया है कि 'ट्रायल के दौरान अभियुक्त को जमानत न मिल पाने के कारण उनकी व्यक्तिगत स्वतंत्रता के अधिकार का हनन होता है ।' यदि अभियुक्त निर्दोष छूटते हैं तो फिर बीच में लम्बे कालखंड के लिए जेल में रखने का कोई औचित्य नहीं रह जाता है। पूज्य बापूजी के केस में न कोई ठोस सबूत, न कोई मेडिकल आधार है बल्कि षड्यंत्र में फँसाने के अनेक प्रमाण हैं। केवल एक लड़की और एक महिला के आरोप पर पूज्य बापूजी को २१ महीनों से जेल में रखा गया है। किसी व्यक्ति को केवल आरोपों के आधार पर लम्बे समय तक जेल में रखे जाने के विषय में अधिवक्ता अजय गुप्ता कहते हैं : ''ट्रायल के दौरान आरोपी को जेल में रखना समय से पूर्व सजा देने से कम नहीं है।''

जेल में रहने के कारण अभियुक्त (आरोप लगानेवाले पक्ष से तुलना करें तो) अपने बचाव के समान अवसरों से वंचित हो जाता है । पूज्य बापूजी के जोधपुर केस में करीब १४ महीने से ट्रायल चल रहा है, अभी पता नहीं कितने और महीने लगेंगे जबकि अहमदाबाद केस में आरोप-पत्र दाखिल किये १७ महीने हो गये, अभी तक ट्रायल प्रारम्भ भी नहीं हुआ । दोनों केसों में पूज्य बापूजी को जमानत नहीं मिली है । जमानत न मिलने के बाद दोषमुक्त हो जाने की दशा में जेल में बिताये गये उनके समय को कोई वापस नहीं दे पायेगा । जेल में रहने के कारण उनके स्वास्थ्य की जो हानि हुई है, उनके सेवाकार्यों में जो रुकावट आयी है, जिसके कारण करोड़ों देशवासियों को आध्यात्मिक, नैतिक और सर्वांगीण प्रगति से वंचित रहना पड़ा है, उसका मूल्य कोई नहीं चुका पायेगा।

अधिकांशतः देखा जाता है कि अभियोजन पक्ष की तरफ से किसी सुसंगत आधार के बिना भी जमानत प्रार्थना-पत्रों का विरोध किया जाता है । पटना उच्च न्यायालय के अधिवक्ता श्री रविशेखर सिंह कहते हैं : ''जमानत किसी व्यक्ति का प्रक्रियागत अधिकार नहीं है बल्कि संविधान के अनुच्छेद २१ के तहत प्राप्त मौलिक अधिकार है। जब किसी केस में लम्बा समय लग रहा हो तो न्यायालय को अभियुक्त की जमानत पर गम्भीरतापूर्वक विचार करना चाहिए। अभियुक्त की उम्र व स्वास्थ्य भी एक विचारणीय पहलू है।''

माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने कहा है कि भारत में एक व्यक्ति की औसत आयु ६५ वर्ष है तथा वृद्धावस्था

जमानत देने के लिए प्रासंगिक एवं महत्त्वपूर्ण है, जैसा कि २००९ (११) एस.सी.सी. ३६३ एवं अन्य निर्णयों में कहा गया है।

पाँच प्रधानमंत्रियों, कई राष्ट्रपतियों, मुख्यमंत्रियों और राज्यपालों ने पूज्य बापूजी के सत्संग और दैवी कार्यों की सराहना की है। पूज्य बापूजी ने १९९३ में विश्व धर्म संसद, शिकागो में भारत का प्रतिनिधित्व किया। ऐसे ७६ वर्षीय संत की लड़खड़ाती तबीयत के बावजूद वे २१ महीने से जेल में हैं।

स्टेट ऑफ राजस्थान विरुद्ध बालचंद (ए.आई.आर. १९७७ एस.सी. २४४७) में मा. सर्वोच्च न्यायालय ने जमानत का मूलभूत सिद्धांत 'बेल नॉट जेल' बतलाया है। वीभत्स अपराध के केस में भी तुरंत जमानत भले न हो लेकिन जाँच एजेंसी द्वारा चार्जशीट दायर किये जाने के बाद जमानत मिलनी चाहिए। पूज्य बापूजी पर मनगढ़ंत आधारहीन झूठे आरोप लगाये गये हैं। आरोप-पत्र दाखिल किये जोधपुर पुलिस को १९ महीने व अहमदाबाद पुलिस को १७ महीने हो गये हैं। प्रसिद्ध न्यायविद् डॉ. सुब्रमण्यम स्वामी ने पूज्य बापूजी के केस के संबंध में कहा : ''केस को लम्बा खींच रहे हैं। जो शर्तें सर्वोच्च न्यायालय ने रखी थीं बापूजी की जमानत के लिए, वे पूरी हो गयी हैं। जो गवाह हैं, सबकी जाँच हो गयी है और इसलिए अब आशारामजी बापू को जेल में रहने का कोई कारण नहीं है। उन्हें न्यायालय को जमानत देनी चाहिए।'' उच्चतम न्यायालय ने एक फैसले में कहा : 'सुनवाई के दौरान कैद एक निश्चित अवधि तक के लिए ही होनी चाहिए और अगर अवधि समाप्त हो जाती है और सुनवाई समाप्त नहीं होती है तो अभियुक्त को रिहा कर देना चाहिए।'

अपने देश में अदालत द्वारा दोष सिद्ध न किये जाने तक अभियुक्त को निर्दोष माना जाता है परंतु जमानत न मिलने की दशा में निर्दोषता की मान्यता का उल्लंघन होता है।

ऐसे और भी कई प्रावधान और उदाहरण हैं, जिनके आधार पर राष्ट्रहितैषी व लोक-मांगल्य के कार्यों में रत पूज्य बापूजी को जमानत मिलनी चाहिए। प्रसिद्ध न्यायविदों, हस्तियों व करोड़ों नागरिकों को यह उम्मीद है कि दोषी लोगों को भी जमानत मिल सकती है तो एक निर्दोष संत को भी तो जमानत मिल सकती है।

- श्री रवीश राय

जमानत के पहले ही क्यों उछाली जाती हैं ऐसी खबरें ?

पिछले २१ महीनों में बापू की जमानत की लगभग प्रत्येक तारीख के पूर्व अचानक कोई धमकी की खबर उछाल दी गयी अथवा गवाहों पर हमले का स्टंट खड़ा करके आरोप बापू पर अथवा आश्रम के साधकों पर मढ़ने का प्रयास किया गया ताकि जमानत याचिका खारिज हो जाय। कोई भी व्यक्ति थोड़ा भी विचार करे तो यह उसकी समझ में आ जायेगा कि खुद की जमानत की याचिका के समय ही गवाहों या किसी पर हमले कोई क्यों करवायेगा ?

इन घटनाओं एवं खबरों के पीछे बापू के खिलाफ साजिश करनेवालों की बहुत ही घिनौनी चाल है, जो भोलानंद के इस बयान से साफ तौर पर उजागर हो जाती है : ''षड्यंत्रकारी लोगों ने मुझे कहा था कि ''गुप्ताजी ! देखो, हम एक-दूसरे को गोली मार देंगे या चाकू से वार कर देंगे, ऐसा कुछ कर लेना अथवा हम करवा देंगे। फिर हम लोग केस बना के आशाराम बापू पर डाल देंगे।'' ऐसी इनकी पूरी प्लानिंग थी।'' यह बात षड्यंत्रकारियों का मोहरा बने ब्रजबिहारी गुप्ता उर्फ भोलानंद नाम के व्यक्ति ने १६ मार्च २०१४ को सूरत में हजारों लोगों के सामने आकर कही थी।

(देखें विडियो लिंक - https://goo.gl/daQ3Tp)

संत की महिमा

ब्रह्मवेत्ता संत का आदर मानवता का आदर है, ज्ञान का आदर है, वास्तविक विकास का आदर है। ऐसे ब्रह्मज्ञानी संत धरती पर कभी-कभार होते हैं।

एक संत हजारों असंत को संत बना सकते हैं लेकिन हजारों संसारी मिलकर भी एक संत नहीं बना सकते। संत बनना कोई मजाक की बात नहीं है। एक संत कइयों के डूबते हुए बेड़े तार सकते हैं, कइयों के पापमय मन को पुण्यवान बना सकते हैं, कई अभागों का भाग्य बना सकते हैं, कई नास्तिकों को आस्तिक बना सकते हैं, कई अभक्तों को भक्त बना सकते हैं, दुःखी लोगों को शांत बना सकते हैं और शांत में शांतानंद (आत्मानंद) प्रकट कराके उसे मुक्त महात्मा बना सकते हैं।

एक बार राजा सुषेण कहीं जा रहे थे। राजा के साथ उनका इकलौता बेटा, रानी और गुरु महाराज थे। यात्रा करते-करते एकाएक आँधी-तूफान आया। नाव खतरे में थी। सबके प्राण संकट में थे। सुषेण के कंठ में प्राण आ गये। राजा जोर-जोर से चिल्लाने लगे : ''अरे बचाओ ! बाबाजी को बचाओ !! और कुछ भी ना करो, केवल इन बाबाजी को बचाओ !...'' बस, इस बात की रट लगा दी। एक बार भी नहीं बोला कि 'मुझे बचाओ, राजकुमार को बचाओ, रानी को बचाओ।' बड़ी मुश्किल से दैवयोग से नाव किनारे लगी। सबके जी-में-जी आया।

मल्लाहों का जो आगेवान था, उसने पूछा : ''राजा साहब ! आपने एक बार भी नहीं कहा कि मुझे बचाओ, रानी को बचाओ, मेरे बच्चे को बचाओ। बाबाजी को बचाओ, बाबाजी को बचाओ बोलते रहे !''

राजा बोला : ''मेरे जैसे दूसरे राजा मिल जायेंगे। मैं मर जाऊँगा तो गद्दी पर दूसरा आ जायेगा। रानी और उत्तराधिकारी भी दूसरे हो जायेंगे लेकिन हजारों के दिल की गद्दी पर दिलबर को बैठानेवाले ये ब्रह्मज्ञानी संत बड़ी मुश्किल से होते हैं। इसलिए ये बच गये तो सब बच गया।''

राजा संतों की महिमा को जानता था कि संतों की वाणी से लोगों को शांति मिलती है। संतों के दर्शन से समाज का पुण्य बढ़ता है। वे दिखते तो इन्सान हैं लेकिन वे रब से मिलानेवाले महापुरुष हैं। ब्रह्मवेत्ता संत का आदर मानवता का आदर है, ज्ञान का आदर है, वास्तविक विकास का आदर है। ऐसे ब्रह्मज्ञानी संत धरती पर कभी-कभार होते हैं। जितनी देर ब्रह्मवेत्ता संतों के चरणों में बैठते हैं और वचन सुनते हैं, वह समय अमूल्य होता है। संत के दर्शन-सत्संग से धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष - चारों फल फलित होने लगते हैं। उन्हीं संत से अगर हमको दीक्षा मिली तो वे हमारे सद्गुरु बन गये। तब तो उनके द्वारा हमको वह फल मिलता है, जिसका अंत नहीं होता।

पुण्य-पाप सुख-दुःख दे के नष्ट हो जाते हैं परंतु संत के, सद्गुरु के दर्शन-सत्संग का फल अनंत से मिलाकर मुक्तात्मा बना देता है।

'ऐसे साधकों को देखकर तीर्थ बोलते हैं : हम किसको पावन करें ? अंतरंग जप और साधनावाले गुरुभक्त से तो हम पावन होते हैं ।'

शीघ्र बन जाओगे धर्मात्मा और महान आत्मा

१० मिनट की अनमोल साधना
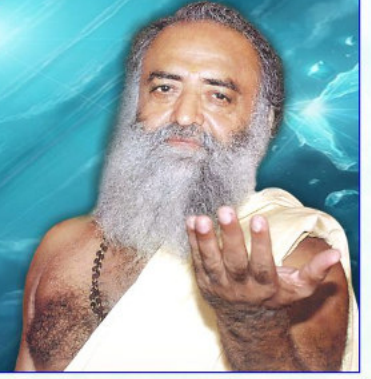
(४ मई २०१५, वैशाखी पूर्णिमा पर पूज्य बापूजी का संदेश)

यह पूनम तुम्हारे जीवन में स्वास्थ्यदायक और शुभ संकल्प फलित करनेवाली बने ! पक्का संकल्प करो कि 'मैं आसन लगा के एक जगह बैठ के प्रतिदिन कम-से-कम १० मिनट 'ॐ ॐ ॐ...' का होंठों से जप करूँगा ।' इसको बढ़ाते जाना । चिंतन करना : 'मिथ्या संसार बदलनेवाला और सुख-दुःख की थप्पड़ें देनेवाला है, तन-मन-धन जानेवाला है, मैं सत्यस्वरूप, चैतन्यस्वरूप, आनंदस्वरूप अपने आनंदस्वभाव में बढ़ता जाऊँगा । ॐ आनंदम्... ॐ शांति... हरि ॐ... गुरु ॐ... हरि और गुरु के अनुभव में एकाकार होता जाऊँगा ।'

एक हरि, दूसरे गुरु, तीसरे हम - ये व्यावहारिक सत्ता में हैं, पारमार्थिक सत्ता में... पूर्ण गुरु किरपा मिली, पूर्ण गुरु का ज्ञान । हरि, गुरु, हम न तुम... दफ्तर गुम ! एक आनंद, चैतन्य अपना आपा ही भासमान हो रहा है । एक ही समुद्र का जल ऊपर-ऊपर अनेक रूप दिख रहा है । एक ही पृथ्वी अनेक देशों, राज्यों, शहरों, गाँवों और गलियारों में बँटी-सी दिख रही है । एक ही आकाश घट, मठ, हिन्दू, ईसाई, पारसी, मनुष्यमात्र एवं जीव-जंतुओं में व्याप रहा है । उसको जाननेवाला 'मैं' चिदाकाश ॐस्वरूप आत्मा हूँ ।

कहीं बाढ़ कहीं भूकम्प, कहीं नया प्राकट्य तो कहीं मौत, कहीं मिलन तो कहीं बिछुड़न, कहीं नाश कहीं उत्पत्ति ! जैसे सागर की तरंगें ऊपर से दिखनेभर को हैं, गहराई में वही शांत उदधि; ऐसे ही तुम गहराई में शांत, साक्षी, चैतन्य अमर आत्मा हो, आनंदस्वरूप हो । यह ॐकार का गुंजन तुम्हें असली स्वतंत्र स्वभाव में सजग कर देगा । सामान्य आदमी अपने को विषय-विकारों में उलझा देता है, धार्मिक व्यक्ति अपने को तीर्थों में व धार्मिक स्थानों में घुमाता रहता है लेकिन धनभागी हैं वे लोग जिन्हें आत्मवेत्ता गुरुओं का ज्ञान मिल जाता है ! सत्संग, सत्साहित्य, नियम, व्रत पानेवाले जन्म-मरण से पार हो जाते हैं । ऐसे गुरुभक्तों के लिए भगवान शिवजी ने कहा है :

धन्या माता पिता धन्यो गोत्रं धन्यं कुलोद्भवः ।
धन्या च वसुधा देवि यत्र स्याद् गुरुभक्तता ।।

लग जाओ होंठों में जप करने को, १० मिनट की साधना अभी से शुरू कर दो । वाह ! शीघ्र बन जाओगे धर्मात्मा और महान आत्मा ! 'ज्ञानेश्वरी गीता' में आता है कि 'ऐसे साधकों को देखकर तीर्थ बोलते हैं : हम किसको पावन करें ? अंतरंग जप और साधनावाले गुरुभक्त से तो हम पावन होते हैं ।'

भृगु ऋषि के शिष्य शुक्र का आदर करते हुए इन्द्रदेव उसको अपने सिंहासन पर बिठाते हैं और अर्घ्य-पाद्य से पूजन करते हैं कि 'आज मेरा स्वर्ग पवित्र हुआ, ब्रह्मवेत्ता गुरु के शिष्य आये । भृगु जैसे ज्ञानी गुरु के शिष्य शुक्रजी आये ।' ॐ ॐ ॐ... फिर से धन्या माता पिता धन्यो...

बाह्य विकास और विनाश तुच्छ है, स्वप्न है । रावण की सोने की लंका का विकास व विनाश तुच्छ हो गया । मीरा, शबरी, एकलव्य, एकनाथ की गुरुभक्ति सर्वोपरि साबित हुई, होती रहेगी... तुम्हारी भी ! ॐ ॐ ॐ...

मानव-जाति के परम हितैषी सद्गुरु

- पूज्य बापूजी

भारत में ब्रिटिश शासन था उस समय की एक घटना है । न्यायालय ने किसीको फाँसी की सजा दी । अब उसको फाँसी लगनी है शाम को ५ बजे तो ज्यूरी में जो न्यायाधीश बैठे थे, उनमें एक बंगाली न्यायाधीश थे । उन्होंने किसी गुरु के सान्निध्य में सात्त्विक साधना, सात्त्विक व्यवहार किया होगा । उस मुजरिम को देख के वे बोले : ''इसने तो सचमुच में बड़े आदमी की हत्या की नहीं है, यह अपराधी नहीं है ।''

दूसरा न्यायाधीश बोला : ''सत्र न्यायालय ने, उच्च एवं सर्वोच्च न्यायालय ने इसकी रहम की अर्जी ठुकरा दी है, ५ बजे इसको फाँसी लगे तब तक अपने को खाली यहाँ बैठना है ।''

''नहीं, मैं इसको फाँसी नहीं देने दूँगा ।''

न्यायाधीश-न्यायाधीश का आपस में वाक्युद्ध हो गया तो पाँच के बदले पौने छः बज गये । इतने में ब्रिटिश शासन का तार आया कि 'ऐसा ही आदमी यूरोप में पकड़ा गया है, इस आदमी को फाँसी न लगे । तार पहुँचने में देर हुई ।'

उन बंगाली न्यायाधीश ने कहा : ''अगर इसको फाँसी दे देते तो पूरा ब्रिटिश शासन मिलकर इसको जिंदा नहीं कर सकता था । जिस परमात्मा ने इसको जीवनदान दिलाने की मुझे प्रेरणा दी, मैं उसीको देखूँगा ।'' और उन्होंने त्यागपत्र लिखकर मुख्य न्यायाधीश को दिया ।

मुख्य न्यायाधीश ने कहा : ''नहीं, आपका अंतरात्मा इतना शुद्ध है कि आपको प्रेरणा हो गयी कि इसने हत्या नहीं की और आपने इसको बचा लिया । आपकी पदोन्नति करेंगे ।''

''पदोन्नति करेंगे तब भी मैं नौकर रहूँगा न ! गुलाम... मनुष्य का गुलाम !! नहीं, मैं तो उस भगवान को जानूँगा जिसने मेरे को प्रेरणा दी कि यह निर्दोष है ।''

उन्होंने त्यागपत्र दे दिया । अब वे उच्च न्यायालय के न्यायाधीश इधर-उधर घूमे लेकिन उनके मन में संतोष नहीं हुआ तो हरिद्वार गये । बुद्धिमान थे, उधर भी उनको कोई ऐसे गुरु नहीं मिले जहाँ उनका सिर झुके तो उनको अपने शरीर पर बड़ी ग्लानि हुई कि 'हाय ! मैं निगुरा होकर जिंदगी बरबाद कर रहा हूँ । मेरे को गुरु भी नहीं मिलते । गुरु के बिना जीना तो व्यर्थ है !...'

एक रात को वे अपनी कमर में पत्थर बाँध के ऋषिकेश में, जहाँ अभी काली कमलीवाले बाबा का घाट

है, वहाँ आत्महत्या करने को तैयार हो गये । वे 'गंगे हर !' करके कूदनेवाले थे, इतने में एक सिद्ध गुरु प्रकट हुए और हाथ पकड़कर बोले : ''ऐ मूर्ख ! रुक जा ! अहं नहीं छोड़ता है और शरीर छोड़ता है ! आत्महत्या करने को तैयार है ! जाओ, मैं तुम्हारा गुरु हूँ। 'नारायण, नारायण...' मंत्र जपो !''

ऐसा बोल के वे सिद्ध गुरु अंतर्धान हो गये । फिर वे न्यायाधीश बड़ौदा के पास चाणोद करनाली है, वहाँ आये । नर्मदा के किनारे एक पेड़ के नीचे बैठ के जो गुरुमंत्र मिला था - नारायण नारायण... अर्थात् नर-नारी का चैतन्य अयन, उसका जप करते थे, मौन रखते थे । एक बार जप की १२ करोड़ संख्या पूरी हो गयी तो साकार चतुर्भुजी भगवान नारायण प्रकट हुए । इससे उनका प्रभाव, तेज बढ़ गया ।

यह है मानव-जीवन की बड़ी उपलब्धि

गुरु तीन प्रकार के होते हैं : (१) देव गुरु (२) सिद्ध गुरु (३) मानव गुरु

देव गुरु - जैसे देवर्षि नारद हैं और बृहस्पतिजी हैं । सिद्ध गुरु कभी-कभी किसी परम पवित्र, परम सात्त्विक, तीव्र तड़पवाले साधक को मार्गदर्शन देते हैं, जैसे - गुरु दत्तात्रेयजी । परंतु मानव गुरु तो मानव के बहुत नजदीक होते हैं, मानव की समस्याओं व उसकी मति-गति से गुजरे हुए होते हैं और मानव की योग्यताओं को जानकर ऊँचाइयों को छुए हुए होते हैं । इसलिए मानव-समाज के लिए मानव गुरु जितने हितकारी, उपयोगी और सुलभ होते हैं, उतने सिद्ध गुरु नहीं होते और देव गुरु को तो बुलाने में कितना कुछ लगे !

परम तत्त्व को पाये हुए मानव गुरु हमारे मन की सारी समस्याओं तथा बुद्धि की उलझनों को जानते हैं और उनके निराकरण की व्यवस्था को भी जानते हैं । यहाँ तक कि हम भी अपने मन को उतना नहीं जानते जितना मानव गुरु जानते हैं । ऐसे सद्गुरु के प्रति श्रद्धा होना मानव-जीवन की बहुत बड़ी उपलब्धि है ।

देव गुरु को प्रणाम है, सिद्ध गुरु को भी प्रणाम है, मानव गुरु को बार-बार प्रणाम है । गुरु बनने से पहले गुरु के जीवन में भी कई उतार-चढ़ाव तथा अनेक प्रतिकूलताएँ आयी होंगी, उनको सहते हुए भी वे साधना में रत रहे और अंत में गुरु-तत्त्व को पाने में सफल हुए । वैसे ही हम भी उनके संकेतों को पाकर उनके आदर्शों पर चलने का, ईश्वर के रास्ते पर चलने का दृढ़ संकल्प करके तदनुसार आचरण करें तो यही बढ़िया गुरु-पूजन होगा ।

जोधपुर में हुए राष्ट्र-जागृति संत-सम्मेलन में संत-समाज एवं विभिन्न संगठन-प्रमुखों ने की माँग

२४ मई को जोधपुर में 'राष्ट्र जागृति संत-सम्मेलन' सम्पन्न हुआ, जिसमें देशभर से आये संतों, धार्मिक संस्थाओं एवं समाजसेवी संगठनों के प्रमुखों तथा समाज के गणमान्य लोगों ने बापूजी को शीघ्र जमानत दिये जाने की माँग की तथा मा. राष्ट्रपति के नाम ज्ञापन भेजा। प्रस्तुत हैं कुछ अंश :
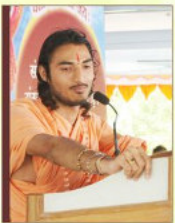
संत कृपारामजी महाराज, गुरुकृपा आश्रम, जोधपुर : संस्कृति को अगर बचाना है तो उसके लिए संतों की रक्षा बहुत जरूरी है क्योंकि हमारी जो संस्कृति है उसका आधार संत हैं। राष्ट्र-विरोधी ताकतें भी उन्हें ही गिराने का प्रयास करती हैं, जिनकी वजह से सारा देश और सारी संस्कृति टिकी हुई होती है और वर्तमान में पूज्य बापूजी जैसे संतों पर ही हमारी संस्कृति और देश टिका हुआ है। इसलिए बापूजी को फँसाने का षड्यंत्र रचा गया। पूज्य बापूजी निर्दोष हैं और वे बहुत जल्दी बाहर आयेंगे।

परमहंस स्वामी अद्वैतानंदजी महाराज, बद्रिका आश्रम : बापूजी ने इस संस्कृति को बढ़ाने में बहुमूल्य योगदान दिया है और इसकी वजह से संस्कृति को खत्म करने में लगी शक्तियाँ उनके पीछे लगीं। बापूजी को न्याय मिले, उनकी शीघ्र रिहाई हो।

श्री रमेश शिंदे, राष्ट्रीय प्रवक्ता, हिन्दू जनजागृ,ति समिति : जिन बापू की वजह से जेल भी मंदिर बन गया, उन पर लगे आरोप सत्य हो सकते हैं क्या ? कभी नहीं । मेडिकल रिपोर्ट में लिखा है कि 'उस लड़की के बदन पर खरोंच भी नहीं है' तो बाकी की तो बात ही नहीं बनती है । और भी ऐसी कई बातें सामने आयी हैं ।

एक सम्पादक के ऊपर भी बलात्कार का गुनाह दर्ज हुआ था, कुछ ही महीनों बाद उसको जमानत मिली । जयललिता पर आरोप सिद्ध हुआ था, वह सजा व १०० करोड़ का जुर्माना - दोनों से बरी हो गयी । तो निर्दोष बापूजी को तो जेल में रखे हुए २१ महीने हो गये, उन्हें जमानत मिले - ऐसी हम अपील करते हैं ।

एक अभिनेता के हाल ही के केस में यह कहा जाता है कि उसके स्थापित ट्रस्ट ने कुछ गरीबों को सहायता की, वह समाजसेवा कर रहा है लेकिन पूज्य बापूजी ने तो करोड़ों लोगों का उद्धार किया है, ५० वर्षों से देशभर में इतने बड़े स्तर पर गरीबों, जरूरतमंदों, गायों की सेवा की जा रही है, बच्चों-युवाओं को अच्छे संस्कार दिये हैं, असंख्य लोगों को व्यसनमुक्त किया है । आज बापूजी जेल में होते हुए भी नेपाल के भूकम्प-पीड़ितों को सहायता करने के लिए अपने भक्तों को राहत-सामग्री सहित वहाँ भिजवाते हैं - यह कितनी बड़ी समाजसेवा है !

देशद्रोही छूट जाते हैं और साधु-संत अंदर रहते हैं । यदि सरकार को वास्तव में अच्छे दिन लाने हैं तो हमारा निवेदन है कि देशविरोधी कार्य करनेवाले लोग अंदर होने चाहिए और जिन्होंने लोगों के मन में देशभक्ति, मातृभक्ति, पितृभक्ति जगायी है, उनको जेल से रिहा किया जाना चाहिए । हमारी माँग है कि २१ महीने हो गये हैं, बापूजी के संवैधानिक मूलभूत अधिकारों व मानवाधिकारों का रक्षण होना चाहिए एवं जमानत मिलनी चाहिए ।

महंत श्री रामगिरि बापू, महानिर्वाणी अखाड़ा : वे लोग बड़े भाग्यशाली हैं, जिनको बापूजी जैसे महान सद्गुरु मिले हैं । कितनी भी आँधी आ जाय, पहाड़ टूट पड़ें, दरिया में से पानी बाहर आ जाय लेकिन बापूजी के प्रति लोगों की जो श्रद्धा है, उसको कोई कम नहीं कर सकता ।

संत हरिदासजी महाराज, वैष्णव सम्प्रदाय : किसी भी माध्यम से पूज्य बापूजी की सच्चाई, निर्दोषता जन-जन तक पहुँचे ऐसी सेवा करनी चाहिए । इस परिस्थिति में भी जो बापूजी से जुड़े हुए हैं, सेवा में जुड़े हुए हैं वे धरती पर के देवता हैं, उनको मेरा प्रणाम है ।

श्री फूलकुमार शास्त्रीजी, अंतर्राष्ट्रीय भागवत कथाकार : हमारे जो भाई-बहन सनातन धर्म की महिमा को भूलते जा रहे हैं, उनको जगाने का कार्य परम पूज्य बापूजी महाराज ने किया है । बापूजी ने करोड़ों लोगों को धर्म के साथ जोड़ा है । सारा संत-समाज पूज्य बापूजी के साथ खड़ा है । यह अंधकार शीघ्र ही छँटनेवाला है, शीघ्र ही सद्गुरु संत श्री आशारामजी बापू हमारे बीच होंगे । भारत में पुनः पूर्ण रूप से धर्म का झंडा फहरायेगा ।

श्री सम्पत पुनिया, जोधपुर जिला प्रमुख, शिवसेना : शिवसेना बापूजी का समर्थन करती है । बापूजी के ऊपर अन्याय हो रहा है और हम इसके खिलाफ आवाज उठायेंगे ।

योगाचार्य स्वामी धीरेन्द्र ब्रह्मचारीजी : आज नहीं, काफी लम्बे अरसे से सनातन संस्कृति, सनातन धर्म के खिलाफ कुछ-न-कुछ कूटनीति चलती आ रही है । बापूजी क्या करते हैं ? अपनी संस्कृति को बचाते हैं । इस देश के करोड़ों गरीबों की मदद करते हैं । लोगों के मन में भक्तिरस भरते हैं । उनके ऊपर इस तरह के गंदे, झूठे आरोप लगाना और उनको इस उम्र में परेशान करना - यह बहुत ही ज्यादा हो गया ।

श्री भवानीलाल माथुर, कार्यकारी अध्यक्ष, राजस्थान प्रांत, विश्व हिन्दू परिषद : आज एक बहुत बड़ा षड्यंत्र चल रहा है भारत को समाप्त करने का । लोगों को संस्कारित करनेवाला, जगानेवाला जो संत-समुदाय है, आज उन संतों पर आघात किया जा रहा है । मैंने डांग (आदिवासी) क्षेत्र में लोगों से बात की तो उन्होंने बताया कि 'संत आशारामजी बापू के प्रवचनों के कारण, उनके सहयोग के कारण, उनके द्वारा हम लोगों में सामग्री एवं आर्थिक सहायता वितरित की जाने के कारण हम आज हिन्दू हैं, अन्यथा मजबूरन हम ईसाई हो जाते । हमें दिवाली, होली नहीं मनाने देते थे । हम बड़े दबाव में थे, बड़े डरपोक हो गये थे ।' ऐसे लोगों को भूख से, अज्ञान से बचानेवाला कौन ? संत आशारामजी बापू । उनके चरणों में मैं नमन करता हूँ ।

श्री श्रवणरामजी महाराज : यदि किसीका सेलिब्रिटी होना, लोग उनसे जुड़े होना यह महत्त्वपूर्ण बिंदु बन सकता है तो बापूजी से तो करोड़ों लोग श्रद्धा, आस्था, सद्भावना से जुड़े हुए हैं और सज्जन, ईमानदार, इज्जतदार जुड़े हुए हैं, ऐसे में उन्हें न्याय मिलना चाहिए । 'कल्पना' नामक एनजीओ पूरा-का-पूरा बापूजी के खिलाफ षड्यंत्र में सहयोग कर रहा है, उसमें अनेक ईसाई हैं । बापूजी के खिलाफ रचे गये षड्यंत्र का खुलासा हो ।

श्रीमती रुपाली दुबे, रिटायर्ड लेफ्टिनेंट ऑफिसर, इंडियन नेवी; अध्यक्षा, अखिल भारतीय नारी रक्षा मंच : हमें जनजागृति करनी है और सारी हिन्दुत्वनिष्ठ शक्तियों को एकत्र करके बापूजी को बाहर लाना है ।

श्री कन्हैयालाल शर्मा, महासचिव, हिन्दू महासभा, जोधपुर : जो समाचार पत्र बापूजी के नाम के आगे विकृत सम्बोधन लगाकर दुष्प्रचार करते हैं, उनका बहिष्कार करें ।

शिवसेना के जोधपुर जिला प्रभारी श्री महेन्द्रजी मेवाड़, जिला सचिव श्री गजेन्द्रजी महिया, जिला कोषाध्यक्ष कैलाश गौड़ आदि विभिन्न प्रमुख गणमान्य लोगों ने भी संत-सम्मेलन में उपस्थित होकर पूज्य बापूजी को शीघ्र रिहा करने की माँग की ।

श्री रामाभाई : प्रत्येक साधक संकल्प ले कि मैं कम-से-कम १००० ऋषि प्रसाद विशेषांक लोगों तक पहुँचाकर सुप्रचार-सेवा करूँगा । पैसों के लालच में आकर कुप्रचार करने-करानेवालों को अब पता चल रहा है, साधकों की श्रद्धा और सेवा उनको भी सही रास्ता दिखा रही है । साधक अपना जीवन धन्य कर रहे हैं । दूसरों को भी निंदा के दोष से बचा रहे हैं ।

संत का निंदकु महा हतिआरा[1] । संत का निंदकु परमेसुरि[2] मारा ।।
संत के दोखी[3] की पुजै न आसा[4] । संत का दोखी उठि चलै निरासा ।।
कबिरा निंदक ना मिलो, पापी मिलो हजार । एक निंदक के माथे पर, लाख पापिन को भार ।।

सावधान व संगठित रहें, हौसला बुलंद रखें

- पूज्य बापूजी

भारत के हिन्दू संत-महापुरुषों को बदनाम करने की साजिश चल पड़ी है । संत कबीरजी, गुरु नानकजी, महात्मा बुद्ध, महावीर स्वामी, स्वामी विवेकानंद आदि संतों का कुप्रचार हुआ तो अब हमारा हो रहा है ।
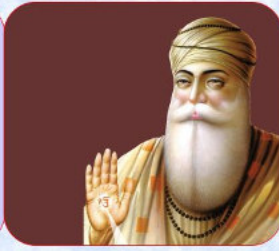
मेरे को कोई फरियाद नहीं है लेकिन ऐसा करनेवालो ! आपको क्या मिलेगा ? जरा अपना भविष्य सोचो । कोई चोर नहीं और आप उसको चोर कहते हैं तो आपको बड़ा भारी पाप लगता है । भइया ! तू भगवान को प्रार्थना कर कि तेरी बुद्धि में भगवान द्वेष नहीं, सच्चा ज्ञान दे दें । फिर तू सत्य की कमाई का उपयोग करेगा और तेरे बच्चों का भविष्य जहरी नहीं, उज्ज्वल बनायेगा ।

कुप्रचार के शिकार न हों

महात्मा बुद्ध को बदनाम करनेवालों ने तो अपनी तरफ से पूरी साजिश की लेकिन वे कौन-से नरकों में होंगे मुझे पता नहीं है, बुद्ध तो आपके, हमारे और करोड़ों दिलों में अभी भी हैं । ऐसे ही गांधीजी के लिए अंग्रेजों के पिट्ठू कितना-कितना बोलते और कितना-कितना लिखते थे लेकिन गांधी बापू डटे रहे तो बेटेजी हार गये व भाग गये और बापूजी अब भी जिंदाबाद हैं ।

जब साबरमती के बापू के लिए लोगों ने ऐसा-ऐसा बोला और वे अडिग रहे तो हम भी साबरमती के बापूजी हैं । हमारी तो किसीके प्रति नफरत नहीं है, द्वेष नहीं है और विदेशी ताकतों को भी हम कभी बुरे शब्द

नहीं कहते हैं। अगर ये किसी दूसरे धर्म के गुरुओं के पीछे ऐसा पड़ते तो आज देश की क्या हालत हो जाती ! हम सहिष्णु व उदार होते-होते अपनी संस्कृति पर कुठाराघात करने दे रहे हैं। अब हम सावधान रहेंगे, सहिष्णु तो रहेंगे लेकिन सूझबूझ से और आपस में संगठित रहेंगे। हमारे भारत में अशांति फैला दें ऐसे तत्त्वों के चक्कर में हम नहीं आयेंगे, कुप्रचार के शिकार नहीं बनेंगे।

अपने अनुभव का आदर करें

किसी पर लांछन लगाना तो आसान है लेकिन संत-महापुरुषों का प्रसाद लेकर अपना बेड़ा पार करना तो पुण्यात्माओं का काम है। इतने-इतने लांछन लगते हैं फिर भी मुझे दुःख होता नहीं और सुख मिटता नहीं। संतों के संग से दूर करनेवाला वातावरण भी खूब बन रहा है। न जाने कितने-कितने रुपये देकर चैनलों के द्वारा फिल्में, कहानियाँ, आरोप ऐसी-ऐसी कल्पना करके बनाया जाता है कि लगता है कि संत ही बेकार हैं; करोड़ों रुपये लेकर जो दिखाते हैं, कुप्रचार करते हैं वे तो सती-सावित्री के हैं, उनके पास तो दूध का धोया हुआ सब कुछ है और गड़बड़ी है तो सत्संगियों में और संतों में है, ऐसा कुप्रचार भी खूब होता है। लेकिन भाई ! जिनकी बीमारियाँ मिट जाती हैं, जिनके रोग-शोक मिट जाते हैं, वे कुप्रचार के शिकार नहीं होते।

सलूका-मलूका संत कबीरजी के शिष्य थे। उन्हें कबीरजी ने कहा : "भई ! वह वेश्या बोलती है कि मैं उसके बिस्तर पर था, दारूवाला बोलता है कि मैंने दारू पिया... ये सब बोलते हैं, सब लोग जा रहे हैं, तुम क्यों नहीं जाते ?"

सलूका-मलूका कहते हैं : "महाराज ! हमारे मन, बुद्धि और तन की सारी बीमारियाँ यहाँ मिटी हैं। हम आपके सत्संग का त्याग करके नहीं जाना चाहते। लोग चाहे आपके लिए कुछ भी बोलें, लल्लू-पंजू भक्त कुप्रचार सुनकर कुप्रचार के शिकार हो जायें तो हो जायें लेकिन महाराज ! हमें आप रवाना मत करिये।"

कबीरजी ने कहा : "इतनी समझ है तुम्हारी तो बैठो।" सत्संग सुनाते-सुनाते कबीरजी ने ऐसी कृपादृष्टि की कि सलूका-मलूका को भावसमाधि में प्रेमाश्रु आने लगे। भगेडू भागते रहे और कौन-से गर्भों में कहाँ-कहाँ भगे भगवान जानें !

मैं सत्य का पक्षधर हूँ, कानून और व्यवस्था का पक्षधर हूँ। समाज की सुंदर व्यवस्था रहे इसमें मैं प्रसन्न होनेवाला व्यक्ति हूँ फिर भी क्या-क्या कुप्रचार किये जा रहे हैं, कुछ-की-कुछ सामग्री जुटाये जा रहे हैं !

वे समाज के साथ बहुत जुल्म करते हैं...

जिनके विचार प्रखर भगवद्-ज्ञान के, भगवत्-प्रसाद के हैं, ऐसे लोग भी सावधान नहीं रहते और जिस किसीके हाथ का खाते हैं, जिस किसीसे हाथ मिलाते हैं तो ऐसे भक्तों की भक्ति भी दब जाती है। इसलिए संग अच्छा करना चाहिए, नहीं तो निःसंग रहना चाहिए। निंदकों की बात सुनकर, कभी हलके वातावरण में रहकर कइयों की श्रद्धा हिल जाती है, शांति और भक्ति क्षीण हो जाती है। जब सत्संगियों के वातावरण में आते हैं तो लगता है कि 'अरे, मैंने बहुत कुछ खो दिया !' इसलिए कबीरजी सावधान करते हैं :

कबिरा निंदक ना मिलो, पापी मिलो हजार।
एक निंदक के माथे पर, लाख पापिन को भार ॥

निंदक ऐसे दावे से बोलते हैं कि लगेगा, 'अरे, यही सत्य जानता है, हम इतने दिन तक ठगे जा रहे थे।' हजारों-हजारों जन्मों के कर्म-बंधन काटकर ईश्वर से मिलानेवाली श्रद्धा की डोर जो काटते हैं, वे समाज के साथ बहुत-बहुत जुल्म करते हैं। उनको हत्यारा कहो तो हत्यारे नाराज होंगे। हत्यारा तो एक-दो को मारता है इसी जन्म में लेकिन श्रद्धा तोड़नेवाला तो कई जन्मों की कमाई नाश कर देता है। (शेष पृष्ठ १९ पर)

गुरुपूर्णिमा पर साधकों को विशेष सौगात

तो सत्यसंकल्प आ जायेगा

- पूज्य बापूजी

घर में दीया जला सको तो जलाओ, नहीं तो ऐसे ही आसन बिछाकर २०-२५ प्राणायाम कर लिये जो दीक्षा के समय बताये जाते हैं - गर्दन आगे झुकाकर (मेधाशक्तिवर्धक प्रयोग) और गर्दन पीछे करके (बुद्धिशक्तिवर्धक प्रयोग) । फिर कमर सीधी व गर्दन सीधी करके बैठ गये । लम्बा श्वास लो और ॐकार का दीर्घ उच्चारण करो । 'हरि ओऽऽ... म...' इस प्रकार उच्चारण करके शांत हो जायें । ऐसा ६ से १० मिनट करो, फिर १२ मिनट, १५ मिनट... जितना भी अधिक कर सकते हो फायदा है । अधिकस्य अधिकं फलम् ।

भगवान के श्रीविग्रह को, ॐकार को, स्वस्तिक को, गुरुदेव को अथवा आकाश या किसी पेड़ को एकटक देखते जाओ । आँख की पलकें गिर जायें तो हरकत नहीं लेकिन आँख की पुतलियाँ दायें-बायें, ऊपर-नीचे न हों । यह नया पाठ सबके लिए है । आप जो भी पूजा-पाठ, जप-तप करते हैं, उसमें से थोड़ा समय ले के और दूसरा थोड़ा समय मिलाकर १० मिनट रोज यह करो । आप यह कर सकते हैं । इससे आपकी समस्याएँ मिटेंगी, आपकी योग्यताएँ निखरेंगी और आपके ऊपर कोई भी भाग्य की कुरेखाएँ होंगी तो... मेटत कठिन कुअंक भाल के ।

जितने संकल्प-विकल्प ज्यादा, उतनी मन के संकल्पों में बलहीनता । जितने संकल्प-विकल्प कम, उतना संकल्प में बल ! यह प्रयोग करने से संकल्प एकदम कम हो जाते हैं, जिससे सत्यसंकल्प सामर्थ्य आता है ।

(पृष्ठ १८ का शेष)

कैसे रखें हौसला बुलंद ?

विदेशी ताकतें तो वैसे ही साधु-संतों और हमारी संस्कृति को तोड़कर देश को तोड़ने के स्वप्न देख रही हैं और आप उस आग में घी डालने की गलती क्यों करते हो भाई साहब ? न लड़ो न लड़ाओ । हौसला बुलंद रखो ! हौसला बुलंद उसको कहा जाता है कि न दुःखी रहो न दूसरे को दुःखी करो, न टूटो न दूसरों को तोड़ो, न खुद डरो न दूसरों को भयभीत करो, न खुद बेवकूफ बनो न दूसरों को बेवकूफ बनाओ । यह वैदिक वाणी के आधार से मैं आपको बता रहा हूँ । मैं तो साँपों के बीच रहा हूँ, रीछों के साथ मुलाकात हुई और उनके प्रति भी मेरा सद्भाव रहा तो मनुष्य के प्रति, किसी पार्टी के प्रति मैं क्यों कुभाव करूँगा ? कुभाव करने से मेरा हृदय खराब होगा । मैं तो सद्भाव की जगह पर बैठा हूँ, सत्संग की जगह पर बैठा हूँ इसलिए मेरा सत्य बात कहने का कर्तव्य है, अधिकार है कि सबको मंगल की बात कह दूँ । हम नहीं चाहते कि कोई उसको उलटा समझकर परेशान हो । हमारी इस सूझबूझ का आप आदर करेंगे तो आपके जीवन में बहुत कुछ ऊँचाइयाँ आ सकती हैं ।

आत्मज्ञान से सराबोर पूज्य बापूजी के पत्र

(गतांक से आगे)

माउंट आबू, नलगुफा

दि. : २७-०४-१९७४

परम आदरणीय रामस्वरूप श्री लालाराम,

मोटी कोरल (बड़ौदा के निकट)

यहाँ का शांत मनोहर वातावरण मन तथा शरीर को स्वयं ही आत्माराम में आकर्षित कर रहा है। आप सरीखे सज्जन संतों के शुभ संकल्पों के कारण ही अंतर्मुख होने की इच्छा होती है। मुझे आशा है कि आप आनंदघन, निजस्वरूप श्रीराम में मस्त होंगे ही, मेरे लिए भी श्रीराम-मस्ती की तरंगें भेजने की मेहरबानी करना।

- आशाराम

माउंट आबू

दि. : १५-६-१९७४

परम पूज्य श्री लालजी काका१,

मोटी कोरल (बड़ौदा के निकट)

वाह भाई वाह ! हरि हरि बोल...

हरि हरि बोल बाबा हरि हरि बोल...

बाबाजी ! आज शाम को एकांत में अचानक आपको पत्र लिखने की इच्छा हुई। आपका प्रेरणाभरा पत्र मिला था। २-३ दिन के अंतर से फिर-फिर से आपका ही पत्र पढ़ने का मानो स्वभाव हो गया है। परंतु ज्यों ही स्वरूप का स्मरण होता है, त्यों ये विचारों की आँधी कहीं दिखती ही नहीं। क्योंकि आपका वास्तविक आत्मा परब्रह्म-परमात्मा होने से सर्वव्यापक है। अतः मुझसे अलग रहने की आपमें ताकत कहाँ है ? मेरे से लालाराम दूर हो तो मिलूँ न ? मिले हुए को क्या नये सिरे से मिला जा सकता है ? यह तो बालक-बुद्धि से ही सब होता है। आईने में बच्चा अपना मुख देखकर उससे मिलने जाता है परंतु अंत में तो अपने सिवा कुछ हाथ नहीं आता। वैसे ही संतों का अनुभव है, वह अबाधित ही है।

यहाँ बहुत ही एकांत और शांत, पवित्र एवं रमणीय, ईश्वरीय दिव्यताभरा वातावरण देखकर एक संत को

निवास करने की इच्छा हुई। लगभग २० दिन से रुके हैं। भजनानंदी हैं। सेवा का लाभ मिलता है और आपकी तरह पुस्तक पढ़वाकर रहने का किराया वसूल कर लेता हूँ। मेरे जिगर के टुकड़े को पत्र लिखते हुए मुक्त हास्य एवं आनंद अनुभव कर रहा हूँ। अंत में पत्र की राह देखता तुम्हारा निजस्वरूप...

- आशाराम

मोटेरा आश्रम, साबरमती, अहमदाबाद

ॐ आनंद ! ॐ आनंद ! ॐ आनंद !

दि. : १९-०९-१९७४

हे त्रिभुवनपति ! साक्षात् परब्रह्म नारायण, लाला काका के स्वरूप में बीड़ा उठानेवाले हे नटवर ! जय श्रीराम राम !

आपके दर्शन मोटी कोरल स्टेशन पर होते क्योंकि आप विदा देने उस तरफ पधारे थे किंतु दुर्भाग्यवश आपके विदाई पर दर्शन नहीं हुए।

ओ होऽऽऽ... भूल गया। भोला भूल गया... आपके स्वरूप के दर्शन का तो किसी भी क्षण में अभाव है ही नहीं। किंतु लाला काका के शरीर तथा भगवती कृष्णा बहन के स्वरूप में बसनेवाली अन्नपूर्णाजी के दर्शन न हुए, यह भूल हुई है। अस्तु आपका समझकर नजरंदाज करना। वाह रे वाह ! लालाराम !

पत्र आज लिखूँ, कल लिखूँ... करते-करते एक सप्ताह आज पूरा हुआ और कलम कहती है कि तत्त्वमसि। 'वह तू है।' परंतु उस बेचारी को पता नहीं है कि 'मैं वह हूँ।' अररर ! मैं और तू भी कल्पना ही है। भाई ! हम न तुम, दफ्तर गुम। कैसा अभेद आनंद !

- आशाराम

इन तिथियों का लाभ लेना न भूलें

२१ जून : दक्षिणायन आरम्भ (पुण्यकाल : सूर्योदय से सूर्यास्त तक), (जप-ध्यान व पुण्यकर्म का कोटि गुना अधिक व अक्षय फल। - पद्म पुराण)

२४ जून : बुधवारी अष्टमी (सूर्योदय से २५ जून प्रातः ५-४७ तक)

२८ जून : पद्मिनी-कमला एकादशी (अनेक पापों को नष्ट कर भक्ति-मुक्ति तथा समस्त तीर्थों व यज्ञों का फल प्रदाता व्रत।)

८ जुलाई : बुधवारी अष्टमी (दोपहर २-५६ से ९ जुलाई सूर्योदय तक)

१२ जुलाई : परमा-कामदा एकादशी (समस्त पाप, दुःख और दरिद्रता आदि को नष्ट करनेवाला व्रत। कीर्तन-भजन आदि सहित रात्रि-जागरण करना चाहिए। महादेवजी ने कुबेर को इसी व्रत के करने से धनाध्यक्ष बना दिया है।)

१४ जुलाई : चतुर्दशी-आर्द्रा नक्षत्र योग (दोपहर १-०६ से १५ जुलाई सुबह ६-४० तक) (ॐकार का जप अक्षय फलदायी)

१६ जुलाई : संक्रांति (पुण्यकाल : सूर्योदय से सूर्यास्त तक), गुरुपुष्यामृत योग (दोपहर २-४९ से १७ जुलाई सूर्योदय तक)

समझ से परे है सद्गुरु का स्वरूप

संत एकनाथजी महाराज सद्गुरुदेव की अगाध महिमा का वर्णन करते हुए कहते हैं : ''हे ॐकाररूप, विश्वरूप सद्गुरु ! तुम्हें नमस्कार है ! तुम ज्ञानस्वरूप हो और विश्व के बाहर-भीतर तुम ही हो । यदि तुम्हारे स्वरूप का विचार किया जाय तो तुम निर्गुण होते हुए अव्यय (अक्षय) हो । ये जो साक्षात् चराचर हैं, वे तुम्हारे निर्गुण स्वरूप के घटक हैं । जीव और शिव तुम्हारी माया है । 'अद्वैत' यही तुम्हारा सच्चा वैभव है ।

घी की गुड़िया साकार दिखायी देती है लेकिन केवल घी के रूप में ही उसे देखने पर वह निराकार ही है । उसी प्रकार तुम अविनाशी और अक्षर (निर्विकार) होकर जगदाकार भासित होते हो । संसार का यह जो रूप दिखायी देता है, वह तुम्हारा ही स्वरूप है । और तुम्हारे अंग को देखा जाय तो तुम अनंग हो । लेकिन उस अनंग का (अर्थात् काम का) तुमको स्पर्श भी नहीं है । जो कुछ दृष्टि को दिखायी देता है, वह तुम नहीं हो । आत्मा, जिससे ब्रह्म दिखायी देता है, वह तुम हो । होना-न होना तुम्हारे पास नहीं है । तुम संसार के ऐसे जगद्गुरु हो !

शब्द तुमसे दूर हैं लेकिन शब्द के अंतर्बाह्य तुम ही हो । चराचर में बोलनेवाले तुम हो और वेदशास्त्रों के वक्ता भी तुम ही हो । जिस प्रकार गन्ने के भीतर-बाहर मधुरता ही रहती है लेकिन मधुरता में गन्ना नहीं होता । तुम्हारा और वेद का नाता भी वैसा ही है । वेदों के वक्ता तुम ही हो और वेदों में तुम्हारा ही प्रतिपादन किया हुआ है ।

गुरुराया (गुरुराज) ! तुम निःशब्द में ही रहते हो, इसीलिए अंत में वेदों को भी तुम्हारा आकलन नहीं हो पाता । जिस प्रकार अनाहत ध्वनि निःशब्द होकर प्रत्येक ध्वनि से मिली हुई रहती है लेकिन वही अनाहत (वाद्य पर बिना आघात किये होनेवाली ध्वनि) बजा सके ऐसा कोई वाद्ययंत्र संसार में नहीं है । उसी प्रकार तुम समस्त वेदों के वक्ता हो, सारे शास्त्रों को युक्ति बतानेवाले हो लेकिन वेदशास्त्रों से सम्मत तुम्हारा वर्णन नहीं किया जा सकता । इसलिए यदि तुम्हें निःशब्द कहा जाय तो 'निःशब्द' और 'सशब्द' यह कहना भी मायिक ही है ।

सारांश यही है कि तुम्हारा स्वरूप समझ में नहीं आता । इन विचारों के ज्ञाता तुम ही हो । लेकिन इस प्रकार तुम ज्ञाता हो यह सिद्ध करने जाओ तो अज्ञान शेष ही नहीं रहता । फिर जहाँ अज्ञान है ही नहीं, वहाँ ज्ञाता कौन है और ज्ञातापन किस चीज का है ? जहाँ शादी लायक लड़की ही नहीं है, वहाँ उसके लिए दूल्हा खोजने के लिए कौन कहेगा ?

तुम ज्ञानी नहीं हो और अज्ञानी भी नहीं हो । तुम बोलनेवाले भी नहीं हो और न बोलनेवाले भी नहीं हो । तुम अनेक भी नहीं हो और एक भी नहीं हो । तुम्हारे अतर्क्य स्वरूप के संबंध में कोई तर्क नहीं चलता । हे सद्गुरुनाथ ! तुम शब्दातीत हो, विकारातीत हो, तुम निर्गुण हो, निरहंकार हो, यह कहने में भी विचार करना पड़ता है क्योंकि जगदाकार और जगदात्मा तो आप ही हो । सारे जगत के आकार में आप प्रसिद्ध हो ।''

('श्री एकनाथी भागवत', अध्याय २३)

आध्यात्मिक उन्नति के १७ अद्भुत लक्षण

- पूज्य बापूजी

गुरु-सुमिरन और सेवा से लघुता छूट जाती है। 'मैं देह हूँ, संसार सच्चा है और संसार से सुख लेना है।' - यह लघुता है। 'मेरे गुरु ब्रह्मा हैं, विष्णु हैं, महेश हैं, साक्षात् परब्रह्म हैं।' - यह गुरुता है। गुरु के चिंतन, सुमिरन तथा सान्निध्य से लघुता कहाँ चली गयी, पता नहीं चलता और गुरुता सहज में आ जाती है, उसमें श्रम नहीं करना पड़ता है। ऐसे शिष्य के जीवन में आध्यात्मिक उन्नति के १७ लक्षण दिखने लगते हैं :

(१) शिष्यों के जीवन में विषयाकार अनुभवों का प्रभाव नहीं पड़ता। जैसे अच्छी चीज देखी तो अच्छी लगी, विषयाकार वृत्ति तो हुई लेकिन चित्त में पहले जैसा प्रभाव नहीं पड़ेगा।

(२) जो साधक आँख बंद करके ॐकार अथवा गुरुदेव का ध्यान करते हैं, उनको गुरुमूर्ति या ॐकार आँख बंद करने के बाद भी स्पष्ट दिखता है। उसको बोलते हैं उपासना में मूर्ति का स्पष्टीकरण।

(३) इष्टमूर्ति, गुरुमूर्ति या ॐकार - जिसका वे ध्यान करते हैं, उसमें इतने रसमय हो जाते हैं कि और कहीं ज्यादा मन लगाने की उनको जगह नहीं दिखती। इधर-उधर मन जायेगा, फिर उसीमें आ जायेगा।

(४) गुरुमूर्ति, इष्टमूर्ति, प्रभुमूर्ति को देखते-देखते शिष्य की एकाग्रता और श्रद्धा से उस मूर्ति में घन सुषुप्ति में जो ब्रह्म है, जो सुषुप्त चैतन्य है, उसकी चेतना से वह भर जाती है। भक्त की भावना में, उपासना में ऐसी ताकत है ! जैसे एक साधु महाराज की भावना ने गोल-मटोल पत्थर के शालग्राम में से श्रीकृष्ण की मूर्ति बना दी और वह मूर्ति अभी भी वृंदावन में गुसाईं साधुओं के पास है। तो यह उपासना का प्रभाव भक्त के जीवन में खिलने लगता है।

(५) शिष्य के जीवन में इष्ट-प्रेम बढ़ने लगता है। गुरुमूर्ति को देखे, गुरुवाक्य को सुने, गुरुचर्चा को सुने तो हृदय से प्रेमरस आने लगता है।

संसारी विषय-विकारों के रस और अक्लवालों, बुद्धिमत्तावालों के रस से भी ये भक्त बहुत ऊँचे रस के धनी हो जाते हैं, ऊँचे अनुभव के धनी हो जाते हैं। जो बलवान कामवासना है, वह उनके जीवन में इतना प्रभाव नहीं डाल पाती है। नहीं तो कामविकार को जीतने में बड़े-बड़े फिसलाहटों से गुजरते हैं। 'भागवत' में

भगवान वेदव्यासजी ने काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार - इन एक-एक दोषों को जीतने के लिए अलग-अलग साधना-पद्धतियाँ बतायीं और आखिर में यह भी बताया कि एतत् सर्वं गुरौ भक्त्या... ये सारी साधनाएँ गुरुभक्ति से सहज में सफल हो जाती हैं।

(६) धीरता बढ़ती है। भावुक होकर गुरु-आश्रम को छोड़ के चले जाने की बेवकूफी छूट जाती है। अंधी भावुकता पर वे विजय पा लेते हैं।

(७) उनको नैतिक अशांति नहीं होती। वे अनैतिकताभरा आचरण नहीं कर पाते। और उनमें मानसिक गंदगी नहीं रहती तो मानसिक अशांति भी नहीं होती। मानसिक अशांतिवाला ही भाग-दौड़ करता है।

नैतिक और मानसिक अशांतिवाले को जो धक्के लगते हैं, गिरावटें आती हैं, उनसे भी वह पार रहता है। हमको ये धक्के नहीं लगे थे।

(८) जिनका भी ध्यान करे - गुरु, ईश्वर, ॐकार का, उनके चारों ओर पीला-पीला रंग दिखाई देता है।

(९) आपके मन में जो विचार आयें, वे साकार होकर आपको ही चकित कर दें - आप ऐसे सत्य संकल्पवादी हो जाते हैं। कोई विचार आया, देखा तो वह हो गया। विचार आया कि 'रेलगाड़ी रुक जाय' तो रुक गयी। विचार आया कि 'बरसात रुक जाय' तो रुक गयी। - ये तुम्हारे विचार ही तुमको चकित कर देंगे।

जब हेलिकॉप्टर गिरा, उस समय भी कोई ज्यादा कुछ नहीं किया था। इतना बड़ा हादसा और किसीको खरोंच तक नहीं आयी! सब चकित हो गये। ये दिव्यताएँ भी जीवन में आने लगती हैं।

(१०) ध्यान-भजन में बैठते ही किसी भी विषय की कोई भी शंका हो, तुरंत उसका समाधान, सही उपाय मिल जाता है। (क्रमशः)

गुरु मात गुरु तात...
संत सुंदरदासजी कहते हैं :

गुरु मात गुरु तात,
गुरु बंधु निज गात।...
फिरि घाट घड़ि करि,
मोहि निस्तारयो है॥

मेरे तो गुरु ही माता हैं, गुरु ही पिता हैं, गुरु ही बंधु हैं। मेरे शरीर के पाँव के नाखून से लेकर सिर तक गुरुदेव ने ही सँवारा है। पहले तो गुरु ने दिव्य चक्षु दिये, फिर मुख में उस रहस्य को बोल पाने की वाणी दी। गुरुदेव ने ही दिव्य कान देकर अपना शब्द सुनाया है। गुरुदेव ने ही हाथ, पाँव, सिर आदि दिये और प्रभु-प्रेम करना भी सिखाया। गुरुदेव ने ही मेरे शरीर में, जो मरा हुआ-सा जीवन जीनेवाला था, प्राण डाले हैं। आगे सुंदरदासजी कहते हैं कि कृपालु गुरुदेव ने इस घट को गढ़कर मेरा उद्धार भी किया है।

परम हितैषी सद्गुरु

यदि आज गुरुजनों का अवतार न होता।
सद्धर्म धरा धाम पै विस्तार न होता॥
अपने को त्याग तप में यदि ये न तपाते।
जीवों का किसी भाँति भी
निस्तार न होता॥
सद्ज्ञान का प्रकाश भी मिलता नहीं कहीं।
गुरुदेव का खुला जो दया-द्वार न होता॥
कितने अधःपतित हम सबके लिए यहाँ।
यदि ये न उतरते तो उद्धार न होता॥
निर्द्वन्द्व पथिक हो रहे गुरुदेव शरण में।
जिनकी कृपा बिना है कोई पार न होता॥

- संत पथिकजी महाराज

अपने-आपको जानने का एकमात्र उपाय

उक्तसाधनसम्पन्नस्तत्त्वजिज्ञासुरात्मनः।
उपसीदेद्गुरुं प्राज्ञं यस्माद्बन्धविमोक्षणम्॥

'उक्त साधन-चतुष्टय से सम्पन्न आत्मतत्त्व का जिज्ञासु प्राज्ञ (स्थितप्रज्ञ) गुरु की शरण में जाय, जिससे उसके भवबंधन की निवृत्ति हो।'

(विवेक चूडामणि : ३३)

वेदांत में गुरु की आवश्यकता क्यों ?

यूँ तो प्रत्येक ज्ञान में गुरु की अनिवार्य उपयोगिता है परंतु ब्रह्मज्ञान के लिए तो दूसरा कोई रास्ता ही नहीं है।
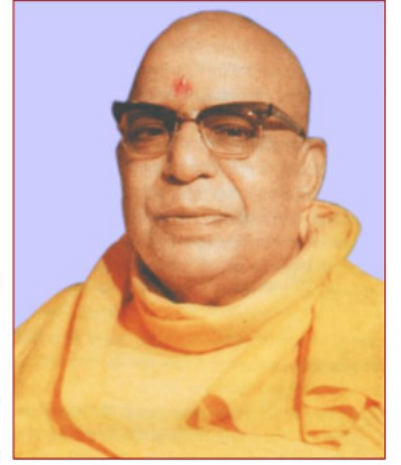
हमारा आत्मा जो ब्रह्म है, वह परोक्ष नहीं है। हमसे कहीं दूर नहीं है। सदा सोते-जागते, उठते-बैठते अपने साथ है। यह नित्य प्राप्त है। इसमें वियोग की सम्भावना नहीं है। परंतु ऐसे नित्य आत्मा को हम पहचान नहीं रहे हैं। यदि इसमें स्थित होने से इसकी पहचान होती तो सुषुप्ति में, समाधि में हो जाती। पास रहते हुए भी हम इसे पहचान नहीं रहे हैं तो बतानेवाले की आवश्यकता है। जब तक कोई बतायेगा नहीं कि वह ब्रह्म तो तू ही है, तब तक इसका ज्ञान नहीं होगा।

उपासना से परोक्ष ईश्वर की प्राप्ति हो सकती है। उससे थोड़ी देर के लिए भावसमाधि हो सकती है। अभ्यास से समाधि लग सकती है। संकल्पसिद्धि होने से वस्तुओं की प्राप्ति तथा स्वर्ग जाना हो सकता है लेकिन इनमें से किसीसे आत्मा की उपलब्धि नहीं होगी। शास्त्रों के अभ्यास से भी यह नहीं होगा। यहाँ तो जो ढूँढ़ रहा है वही है, आपन खेल आपहि देखे। अतः बिना बतानेवाले के आत्मा का अपरोक्ष ज्ञान हो ही नहीं सकता। इसीसे 'छांदोग्योपनिषद्' की श्रुतियाँ स्पष्ट कहती हैं :

आचार्यवान्पुरुषो वेद। (६.१४.२)

जो गुरुप्राप्त पुरुष है, वही इसको जानता है।

आचार्याद्धैव विद्या विदिता साधिष्ठं
प्रापतीति... (४.९.३)

आचार्य से जानी गयी विद्या ही प्रतिष्ठित होती है।

प्रवचन से, मेधा से, बहु-श्रवण या स्वाध्याय से आत्मा की प्राप्ति नहीं होती। इसके लिए गुरु चाहिए। इस प्रकार वेदांत में 'गुरु-उपसदन' अनिवार्य अंग है।

गुरु की शरण में कैसे जायें ?

तद्विज्ञानार्थं स गुरुमेवाभिगच्छेत्
समित्पाणिः श्रोत्रियं ब्रह्मनिष्ठम्।

'उस ब्रह्म को आत्मरूप से जानने के लिए वह जिज्ञासु हाथ में समिधा लेकर श्रद्धा और विनयभाव के साथ श्रोत्रिय और ब्रह्मनिष्ठ सद्गुरु की शरण में जाय।' (मुंडकोपनिषद् : १.२.१२)

गुरुमेव अभिगच्छेत्... एकमात्र गुरु की शरण में जाय । अभिगच्छेत् अर्थात् पूर्णरूप से जाय । मन में संसार को अपना सर्वस्व माने और मुख से गुरु को सर्वेसर्वा कहे तो यह गुरु-शरणागति नहीं है।

गुरु में पूरी भक्ति होनी चाहिए अर्थात् गुरु, इष्ट, आत्मा और मंत्र - इन चारों में एकता होनी चाहिए।

यस्य देवे परा भक्तिर्यथा देवे तथा गुरौ। (श्वेताश्वतर उपनिषद् : ६.२३)

गुरु-शरणागति में पहली बात है कि जो अविश्वासी है वह गुरु की शरण में नहीं जाता । अविश्वास जिसके हृदय में है, वह उसीके हृदय को दुःख देगा, जिसके प्रति अविश्वास है उसको दुःखी नहीं करेगा । यदि संसार में एक भी व्यक्ति ऐसा नहीं जिसके प्रति तुम्हारे चित्त में संशयरहित विश्वास है तो तुम्हारे अंतःकरण की स्थिति अत्यंत शोचनीय है।

अज्ञश्चाश्रद्दधानश्च संशयात्मा विनश्यति ।

(गीता : ४.४०)

स्वयं समझता नहीं और किसी पर श्रद्धा नहीं करता, ऐसे संशयात्मा का विनाश निश्चित है । अपने अंतःकरण में संशय और अविश्वास नहीं हो तो यही अंतःकरण की शुद्धि है।

गुरु-शरणागति में दूसरी बाधा है अभिमान । परमात्मा मानशून्य अर्थात् मापशून्य है । देश-काल और वस्तुकृत अंत उसमें नहीं है, वह परिपूर्ण है और हममें है अभिमान । हममें अभिमान कब होता है ? जब हम अपना मान अर्थात् माप बना लेते हैं कि हम विद्वान हैं, धनी हैं, तपस्वी हैं इत्यादि । यह साढ़े तीन हाथ का शरीर हमारा माप बन जाता है । परंतु श्रुति कहती है कि ब्रह्म को जो अपने से अलग मानेगा, वह पराभूत हो जायेगा । एक रबड़ के थैले में पहाड़ कैसे आ सकता है ? इसी प्रकार अभिमान के घेरे में कोई ईश्वर को लेना चाहे तो कभी नहीं आ सकता । ईश्वर मिलेगा तो अभिमान की निवृत्ति से ही मिलेगा । अभिमान दम्भ है । इसकी निवृत्ति गुरु-शरणागति से ही होगी ।

'श्रीमद्भागवत' में मनोरोगों में से प्रत्येक की अलग-अलग औषधि बतायी है, जैसे निःसंकल्पता काम की और कामनाओं का त्याग क्रोध की औषध है । परंतु बाद में बताया कि गुरुभक्ति एक साथ सब मनोदोषों की रामबाण औषधि है। इसलिए गुरु-शरणागति आवश्यक है। (क्रमशः)

मूर्ख व बुद्धिमान की पहचान

सुकरात

सुकरात से उनके एक शिष्य ने विनम्रता से पूछा : ''मूर्ख और बुद्धिमान की क्या पहचान है ?''

तत्त्वज्ञानी महात्मा सुकरात बोले : ''जो ठोकर खाने के बाद अपने अनुभव से भी लाभ न उठाये और ठोकरें ही खाता रहे वह है मूर्ख और जो दूसरों के अनुभवों व महापुरुषों की सीख से लाभ उठा के ठोकर खाने से पहले ही सँभल जाय तथा कर्तव्य को और अच्छे ढंग से सम्पन्न करे वह है बुद्धिमान।''
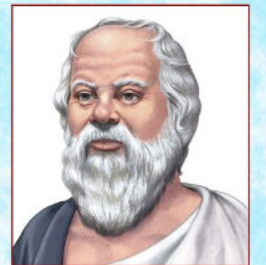
यदि सचमुच बुद्धिमान बनना है तो कर्तव्य क्या है यह भी समझना होगा । बापूजी के सत्संग में इसका रहस्योद्घाटन होता है : ''वास्तविक कर्तव्य है अपने ब्रह्मस्वरूप को जानना, मरणधर्मा शरीर में अमरत्व को जानना । हे मानव ! लौकिक कर्तव्य तो निभाओ परंतु इन कर्तव्यों को निभाते-निभाते अपने सुखस्वरूप का ज्ञान पाने का जो वास्तविक कर्तव्य है, उसके लिए भी प्रतिदिन अवश्य समय निकालो । चालू व्यवहार में ही बीच-बीच में यह विचार करो कि आखिर यह सब कब तक ? विषय-विलास से वैराग्य हो और भगवद्-रस, भगवद्-ज्ञान, भगवद्-आनंद में रुचि हो जाय यही कर्म का वास्तविक फल है। यही वास्तविक कर्तव्य है।''

तेरे तन-मन-धन की तपस्या...

ऐ मेरे सद्गुरु प्यारे, सब की आँखों के तारे।
तेरे तन-मन-धन की तपस्या,
तेरे जीवन की कुर्बानी ॥
जब हम बैठे थे घरों में, तू भुला रहा था मन को।
जग में रहकर सब भूला,
न भोजन चाहा न पानी ॥
तेरे तन-मन-धन की...
गुरुदर पर सेवा करते,
हाथों से था खून निकलता ।
पर गुरुसेवा में तत्पर,
इस देह का भान था भूलता ॥
गुरु आज्ञा प्रथम निभानी।
तेरे तन-मन-धन की...
धू सेठ कहलानेवाला,
गुरुदर पे मरता-मिटता ।
तेरी मरजी पूरन हो, ये ध्यान हृदय में धरता ॥
बस निराकार ने थामा,
न होने दी कुछ हानि ।
तेरे तन-मन-धन की...
वो कैसी रातें होंगी,
प्रभु-प्रेम में जब तू रोया ।
दुनिया थी नींद में सोती,
तू ध्यान समाधि में खोया ॥
निज देह को तुमने तपाया,

तेरी महिमा न जाये बखानी ।
तेरे तन-मन-धन की...
माँ का आँचल बिसराया,
पत्नी का प्रेम ठुकराया ।
किन-किन राहों पे चल के,
था ब्रह्मज्ञान को पाया ॥
फिर आत्मानंद में डूबा,
४० दिन की वो तपस्या ।
तेरे तन-मन-धन की...
था आसोज सुद दो दिन,
और संवत् बीस इक्कीस ।
मध्याह्न ढाई बजे,
मिल गया ईस से ईस ॥
सागर में कुम्भ जो फूटा,
तब जल जल में ही समाया ।
तेरे तन-मन-धन की...
गुरु सत्य का रस पिलाया,
तन-मन हृदय में समाया ।
हर नस-नस में पहुँचा वो,
हर रूह को 'ॐ' जपाया ॥
वो रस मेरी आँखों से छलके,
गुरु-प्रेम का बनकर पानी ।
तेरे तन-मन-धन की...
हर तरफ है आतम दर्शन,
हर तरफ है नूर नूरानी ।
हर तरफ है तेरा उजाला,
हर तरफ है तू ब्रह्मज्ञानी ॥
है आज की तेरी कहानी ।
तेरे तन-मन-धन की...
दरिद्र-नारायण की सेवा करते,
है अपना आप लुटाया ।
गली-गली गाँव में जाकर,
सबको ही सुख पहुँचाया ।
भारत का रत्न नूरानी ।
तेरे तन-मन-धन की...
हम न भूलें उस तप को,
कैसे तूने गुरु को रिझाया ।
किन-किन राहों पर चल के,
इस ब्रह्मज्ञान को पाया ॥
सूरज को कैसे ढकेगा,
उसका तो तेज नूरानी ।
तेरे तन-मन-धन की...
ऐ मेरे सद्गुरु प्यारे,
तू दे रहा कैसा इशारा ।
जैसे तू ब्रह्म में स्थित है,
ऐसा हो बोध हमारा ॥
तेरे तन-मन-धन की तपस्या,
तेरे जीवन की कुर्बानी ।

– साधक परिवार

गलत आरोप लगा के बापूजी को प्रताड़ित किया जा रहा है
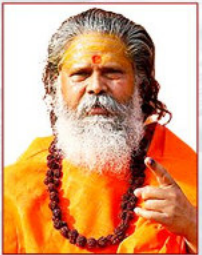
– श्री श्री १०८ श्री नरेन्द्र गिरि महाराज, अध्यक्ष, अखिल भारतीय अखाड़ा परिषद

कुछ ऐसी संस्थाएँ हैं जो साधु-महात्माओं पर बिना प्रमाण के आरोप लगाकर उनको बदनाम करने का षड्यंत्र करती हैं । संत आशारामजी बापू के खिलाफ भी षड्यंत्र किया गया है । गलत आरोप लगा के उनको प्रताड़ित किया जा रहा है लेकिन कोई भी आरोप सिद्ध नहीं हो पाया ।

कांची कामकोटि पीठ के शंकराचार्य श्री जयेन्द्र सरस्वतीजी का मीडिया द्वारा बहुत दुष्प्रचार किया गया लेकिन जब वे निर्दोष बरी हुए तो एक पंक्ति भी नहीं दिखायी गयी । तो इस बीच जो उनको प्रताड़ित किया गया, उसका जिम्मेदार कौन होगा ? कल हमारे बापू भी निर्दोष बरी हो के आयेंगे तो इस बीच उनको जो प्रताड़ित किया गया, उसका जिम्मेदार कौन होगा ? समाज को यह सोचना चाहिए कि सनातन धर्मावलम्बियों को, हमारे संत-महात्माओं को कहीं-न-कहीं से षड्यंत्र करके फँसाया जा रहा है । हमें जागृत होना होगा ।

दर्शन की चाहत है बापू हमें

गुरुवर के नन्हे-से बालक हैं हम,
बिछुड़ें न तुमसे, हों ऐसे करम।
दर्शन की चाहत है बापू हमें,
किस नाम से बोलो पुकारें तुम्हें।
थक गये हैं सबके बौने कदम,
गुरुवर के नन्हे-से बालक हैं हम।
सूना गगन-सा हृदय है मेरा,
दर्शन की बंसी बजा दो जरा।
मोड़ो न मुख यूँ जियें कैसे हम,
गुरुवर के नन्हे-से बालक हैं हम।
कैसे पुकारें रो-रो के हम,
हमारी तड़प में नहीं कोई दम।
निर्बल के बल हो सहारे परम,
गुरुवर के नन्हे-से बालक हैं हम।
अज्ञान सूरज चढ़ा जा रहा,
जीवन बगीचा उजड़ जा रहा।
बापूजी आ के मिटाओ तपन,
गुरुवर के नन्हे-से बालक हैं हम।
बच्चों का बचपन सफल है तभी,
माँ का सान्निध्य हो मिलता जभी।
सान्निध्य आँचल से कर दो रहम,
गुरुवर के नन्हे-से बालक हैं हम।
भरोसा है बापू ये पक्का हमें,
तुम ही सँभालोगे आकर हमें।
दर्शन के प्यासे यूँ कब से हैं हम,
गुरुवर के नन्हे-से बालक हैं हम।

हिन्दू महासभा ने की बापूजी की रिहाई की माँग

संत आशारामजी बापू के समर्थन में 'अखिल भारत हिन्दू महासभा युवा मोर्चा' के सैकड़ों कार्यकर्ताओं द्वारा जोधपुर में बापूजी की जल्द-से-जल्द रिहाई की माँग की गयी। हिन्दू महासभा द्वारा पूज्य बापूजी को निर्दोष बताया गया।

हिन्दू महासभा का कहना है कि एक ओर लालू प्रसाद यादव, जयललिता, तरुण तेजपाल, मसरत आलम तथा सलमान खान जैसे आरोपी, जिनमें से कइयों पर गुनाह साबित भी हुआ, वे जमानत पर बाहर आये या तो निर्दोष छूट गये हाथों-हाथ। वहीं दूसरी ओर एक भी आरोप सिद्ध न होने पर भी ७६ वर्षीय वृद्ध संत आशारामजी बापू को लड़खड़ाते स्वास्थ्य के बावजूद २१ माह से जमानत नहीं दी जा रही है। इससे हिन्दुओं की न्यायपालिका पर आस्था डगमगा रही है तथा हिन्दू समाज में अशांति का वातावरण छा रहा है।

अंत में सभी कार्यकर्ताओं ने कलेक्टर ऑफिस जाकर कलेक्टर को ज्ञापन दिया।

(संदर्भ : दैनिक नवज्योति, राजस्थान पत्रिका, जनगण दैनिक, न्यूज पोस्ट)

गुरुदेव की अंतर्वाणी

- पूज्य बापूजी

हे साधक ! 'अपने उस आत्मस्वरूप को, मधुरस्वरूप को, मुक्तस्वरूप को हम पाकर रहेंगे' - ऐसा दृढ़ निश्चय कर । विघ्न-बाधाओं के सिर पर पैर रखता जा । यह मन की माया कई जन्मों से भटका रही है । अब इस मन की माया से पार होने का संकल्प कर । कभी काम, क्रोध, लोभ में तो कभी मद, मात्सर्य में यह मन की माया जीव को भटकाती है । लेकिन जो भगवान की शरण हैं, गुरु की शरण हैं, जो सच्चिदानंद की प्रीति पा लेते हैं वे इस माया को तर जाते हैं । भगवान श्रीकृष्ण ने कहा :

मामेव ये प्रपद्यन्ते मायामेतां तरन्ति ते ।

(गीता : ७.१४)

माया उनका कुछ नहीं बिगाड़ सकती । भगवान के जो प्यारे हैं, गुरु के जो दुलारे हैं, माया उनके अनुकूल हो जाती है ।

जैसे शत्रु के कार्य पर निगरानी रखते हैं, वैसे ही तू मन के संकल्पों पर निगरानी रख कि कहीं यह तुझको माया में तो नहीं फँसाता । संसार के भोगों में उलझना है तो बहुतों की खुशामद करनी पड़ेगी, बहुतों से करुणा-कृपा की याचना करनी पड़ेगी, उस पर भी कंगालियत बनी रहेगी और सच्चा सुख पाना है तो बस, भगवत्स्वरूप गुरु की रहमत काफी है ।

बेटा ! शरीर से भले तू दूर है लेकिन मेरी दृष्टि से तू दूर नहीं है, मेरे आत्मस्वभाव से तू दूर नहीं है । मैं तुझे अंतर में प्रेरित करता हूँ । तू अच्छा करता है तो मैं धन्यवाद देता हूँ, बल बढ़ाता हूँ । कहीं गड़बड़ करता है तो मैं तुझे रोकता-टोकता हूँ । तू देखना मेरे चित्र की ओर । जब तू अच्छा करेगा तो मैं मुस्कराता हुआ मिलूँगा और जब तू गड़बड़ करके आयेगा तो उसी चित्र में मेरी आँखें तेरे को नाराजगी से देखती हुई मिलेंगी । तू समझ लेना कि हमने अच्छा किया है तो गुरुजी प्रसन्न हैं और गड़बड़ की तो गुरुजी का वही चित्र तुझे कुछ और खबरें देगा । गुरुमंत्र के द्वारा गुरु तेरा अंतरात्मा होकर मार्गदर्शन करेंगे । तू घबराना मत !

सदाचारी के बल को अंतर्यामी पोषता है और वही देव दुष्ट आचरण करनेवाले की शक्ति हर लेता है, उसकी मति हर लेता है । रब रीझे तो मति विकसित होती है और जिसकी मति विकसित होती है वह जानता है कि आखिर कब तक ? ये संबंध कब तक ? ये सुख-दुःख कब तक ? ये भोग और विकारों का आकर्षण कब तक ? आपका विवेक जगता है तो समझ लो रब राजी है और विवेक सोता है, विकार जागते हैं तो समझ

लो रब से आपने पीठ कर रखी है, मुँह मोड़ रखा है। रब रुसे त मत खसे। ना-ना... दुनिया के लिए रब से मुँह मत मोड़ना। रब के लिए भले विकारों से, दुनिया से मुँह मोड़ दो तो कोई घाटा नहीं पड़ेगा क्योंकि ईश्वर के लिए जब चलोगे तो माया तुम्हारे अनुकूल हो जायेगी।

जो ईश्वर के लिए संसार की वासनाओं का त्याग करते हैं, उन्हें ईश्वर भी मिलता है और संसार भी उनके पीछे-पीछे चलता है लेकिन जो संसार के लिए ईश्वर को छोड़कर संसार के पीछे पड़ते हैं, संसार उनके हाथों में रहता नहीं, परेशान होकर सिर पटक-पटक के मर जाते हैं और जो चीज कुछ पायी हुई देखते हैं, वह भी छोड़कर बेचारे अनाथ हो जाते हैं। इसीलिए हे वत्स ! तू अपने परमात्म-पद को सँभालना। उस प्रेमास्पद की प्रेममयी यात्रा करना।

संत की दयालुता और प्रकृति की न्यायप्रियता

एक बार अक्कलकोट (महा.) वाले श्री स्वामी समर्थ जंगल में एक वृक्ष के नीचे आत्मानंद की मस्ती में बैठे थे। आसपास हिरण घास चर रहे थे। इतने में कुछ शिकारी आ गये। उन्हें देखते ही हिरण संत की शरण में आ गये। संत ने प्रेम से हिरणों को सहलाया। उनमें हिरण-हिरणी के अलावा उनके दो बच्चे भी थे। स्वामीजी ने हिरण दम्पति को पूर्वजन्म का स्मरण कराते हुए कहा : ''अरे ! तुम लोग पूर्वजन्म में गाणगापुर (कर्नाटक) में ब्राह्मण थे। यह हिरणी तुम्हारी नारी थी, तुम्हारा भरा-पूरा घर था लेकिन तुमने संतों को सताया था, उनकी निंदा की थी इसलिए तुम्हें इस पशुयोनि में जन्म मिला। जाओ, अब आगे कभी ऐसी भूल मत करना।'' हयात संतों से जितना हो सके लाभ ले लेना चाहिए। उनका लाभ न ले सकें तो कम-से-कम उन्हें या उनके भक्तों को सताने का महापाप तो नहीं करना चाहिए। अन्यथा पशु आदि हलकी योनियों में जाना पड़ता है।

प्रकृति न्यायप्रिय होती है। उसका नियम है संत के निंदक को सजा। प्रकृति सजा देने में किसीको भी नहीं छोड़ती। आज नहीं तो कल, संतों के अपमान का फल दे ही देती है। अतः कभी भूलकर भी किसी संत-महापुरुष का अपमान नहीं करना चाहिए। उनकी निंदा, आलोचना करनेवाला अपने तथा अपने परिवारवालों को दुःखों और परेशानियों में ही डालता है।

सावधान रहना

''आश्रम व आश्रम के सेवाकार्यों के लिए कोई चंदा माँगने आये तो उससे सावधान रहना। तुम्हारे पैसों का दुरुपयोग न हो। कोई ठग बापू का साधक होने का ड्रामा करते हैं, लूट भी चलाते होंगे। न ठगो न ठगे जाओ, न बेवकूफ बनाओ न बेवकूफ बनाये जाओ।'' - पूज्य बापूजी

(२८ मई २०१५, जोधपुर)

पर्यावरण सुरक्षा, जीवन रक्षा

(गतांक का शेष)

तुलसी, पीपल, आँवला व नीम के लाभ

तुलसी : तुलसी उत्तम प्रदूषणनाशक है। जहाँ तुलसी का पौधा होता है वहाँ पर कई संक्रामक बीमारियों के जीवाणु पैदा ही नहीं होते । तुलसी का पौधा उच्छ्वास में स्फूर्तिप्रद ओजोन (ज३) वायु छोड़ता है। ओजोन वायु वातावरण के कीटाणु, विषाणु, फंगस आदि को नष्ट करके ऑक्सीजन में रूपांतरित हो जाती है। जिनके घर में तुलसी की मिट्टी रहती है, उनके घर में यमदूत नहीं जा सकते।

तुलसी

पीपल : यह धुएँ तथा धूलि के दोषों को वातावरण से सोखकर पर्यावरण की रक्षा करनेवाला एक महत्त्वपूर्ण वृक्ष है। यह चौबीसों घंटे ऑक्सीजन उत्सर्जित करता है। इसके नित्य स्पर्श से

पीपल

रोग-प्रतिरोधक क्षमता की वृद्धि, मनःशुद्धि, आलस्य में कमी, ग्रहपीड़ा का शमन, शरीर के आभामंडल की शुद्धि और विचारधारा में धनात्मक परिवर्तन होता है। बालकों के लिए पीपल का स्पर्श बुद्धिवर्धक है। रविवार को पीपल का स्पर्श न करें। पीपल के वृक्ष को प्रणाम करने से आयु और सम्पदा बढ़ती है। इसके रोपण से अक्षय पुण्य होता है । यह दमानाशक, हृदयपोषक, रोगनाशक तथा आह्लाद व मानसिक प्रसन्नता का खजाना है।
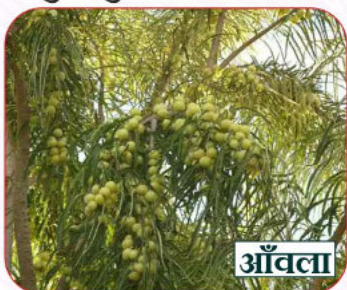
आँवला : इसके स्मरणमात्र से गोदान का फल प्राप्त होता है। इसके दर्शन से दुगना और फल खाने से तिगुना पुण्य होता है। आँवले के वृक्ष का पूजन कामनापूर्ति में सहायक है। कार्तिक मास में आँवले के वन में श्रीहरि की पूजा व आँवले की छाया में भोजन पापनाशक है। आँवले के वृक्षों से वातावरण में सात्त्विकता की वृद्धि होती है व शरीर में शक्ति का, धनात्मक ऊर्जा का संचार होता है।

आँवला

आँवला-रस से नित्य स्नान लक्ष्मीप्राप्ति में सहायक है । जिस घर में सदा आँवला रखा रहता है, वहाँ भूत, प्रेत और राक्षस नहीं जाते।

नीम : नीम में ऐसी कीटाणुनाशक शक्ति मौजूद है कि यदि नियमित नीम की छाया में दिन के समय विश्राम किया जाय तो सहसा कोई रोग होने की सम्भावना ही नहीं रहती।

नीम के अंग-प्रत्यंग (पत्तियाँ, फूल, फल, छाल, लकड़ी) उपयोगी और औषधियुक्त होते हैं। इसकी कोंपलों और पकी हुई पत्तियों में प्रोटीन, कैल्शियम, लौह और विटामिन 'ए' पर्याप्त मात्रा में पाये जाते हैं।

तुलसी, पीपल, आँवले के पौधों को घर में गमले में लगाकर भी इनका लाभ ले सकते हैं। पीपल व आँवले के पौधे जब बड़े हो जायें तो उन्हें उचित स्थान में लगा देना चाहिए।

प्रदूषणयुक्त, ऋण-आयनों की कमीवाली एवं ओजोनरहित हवा से रोगप्रतिकारक शक्ति का ह्रास होता है व कई प्रकार की शारीरिक-मानसिक बीमारियाँ होती हैं। इन पौधों को लगाने से अरबों रुपयों की दवाइयों का खर्च बच जायेगा। ये वृक्ष शुद्ध वायु के द्वारा प्राणिमात्र को एक प्रकार का उत्तम भोजन प्रदान करते हैं।

देश का हर व्यक्ति करे

पूज्य बापूजी ने वायुशुद्धि हेतु सभीके लिए सुंदर युक्ति बतायी है : ''आप अपने घरों में गाय के गोबर के कंडे पर अगर एक चम्मच मतलब ८-१० मि.ली. देशी गाय का शुद्ध घी डालकर धूप करते हैं तो एक टन शक्तिशाली वायु बनती है। इससे मनुष्य तो क्या कीट-पतंग और पशु-पक्षियों को भी फायदा होता है। ऐसा शक्तिशाली भोजन दुनिया की किसी चीज से नहीं बनता। वायु जितनी बलवान होगी, उतना बुद्धि, मन, स्वास्थ्य बलवान होंगे।''

इन वृक्षों की महिमा वन विभागवाले व आम आदमी जानें। समझदार साधकों को इसके लिए सोशल मीडिया का उपयोग करना चाहिए। यह लेख प्रिंट मीडिया को भी दे सकते हैं।

धन्य हैं संत निज धाम सुख छाड़ि कै...

संत पलटू साहिब कहते हैं :

धन्य हैं संत निज धाम सुख छाड़ि कै,
आन के काज को देह धारा।...
...दास पलटू कहै रहे सब डूबते,
संत ने पकरि कै किहा पारा॥

वे संत धन्य हैं, जिन्होंने निज धाम को छोड़कर संसार के कल्याण के लिए अवतार धारण किया। ज्ञानरूपी तलवार से संसार में घुसकर संसार का मोह समाप्त किया। वे शत्रु-मित्र दोनों से प्रीति करते हैं, सबकी भली-बुरी भी सुन लेते हैं।

पलटू साहिब कहते हैं कि मैं साहिब (ईश्वर) को नहीं जानता पर संत को जानता हूँ जिन्होंने संसार के जीवों को तारा है। संत संसार में आकर भगवन्नाम में दृढ़ करके जगत के जीवों को तारते हैं। यदि संत न होते तो भगवान का भजन कोई नहीं जानता। संत मंत्रदीक्षा देकर काल के सिर पर आघात करते हैं। इसी हेतु संत-महापुरुषों का अवतार धरा पर होता है। पलटू साहिब कहते हैं कि सारा संसार डूब रहा था पर संत ने ही पकड़कर उनको पार किया।

दिव्य वैदिक प्रार्थना

- पूज्य बापूजी

दुर्जनः सज्जनो भूयात् सज्जनः शान्तिमाप्नुयात्।
शान्तो मुच्येत बन्धेभ्यो मुक्तश्चान्यान् विमोचयेत्॥

यह वैदिक प्रार्थना कितनी उदारता की खबर देती है। हे भगवान ! दुर्जनः सज्जनो भूयात्... 'दुर्जन सज्जन बनें।' दुर्जनों का नाश नहीं, सज्जन हो जायें और सज्जन केवल सज्जनता में ही अटकें नहीं, सज्जनः शान्तिमाप्नुयात्... 'सज्जनों को शांति मिले।' और शांत व्यक्ति शांति में रुके न रहें। शान्तो मुच्येत बन्धेभ्यो... 'शांतात्मा अपने मुक्त स्वरूप का अनुभव करें।' शांत व्यक्ति बंधनों से, जन्म-मरण से, राग-द्वेष से, सुख-दुःख की सत्यता से मुक्त हो जायें। मुक्तश्चान्यान् विमोचयेत्। 'मुक्त पुरुष औरों को मुक्ति के मार्ग पर ले जायें।' मुक्ति हमारा सहज जन्मसिद्ध अधिकार है। कितनी दिव्य दृष्टि, कितना ऊँचा नजरिया है !

जीव तो महासज्जन परमात्मा का अविभाज्य अंग है, दुर्जनता आगंतुक है। दुर्जन को इन्द्रियों के द्वारा सुख लेने की आदत है इसलिए वह बेचारा दुर्जन बना। कपड़ा है न, यह वास्तव में मैला नहीं होता परंतु मैल आता है इसलिए धोना पड़ता है। ऐसे ही दुर्जनता आती है। जप, सत्संग, ध्यान से नीरसता चली जाती है तो दुर्जनता भी चली जाती है, तो सज्जन बनेगा। इसीलिए प्रार्थना करते हैं : 'हे भगवान ! दुर्जन सज्जन बनें और सत् की तरफ आयें।' सज्जनता तो स्वभाव से है।

सज्जन संसार के व्यवहार में इधर-उधर उलझे नहीं, उसको शांत भी होना चाहिए। शांति से सामर्थ्य मिलता है, रस मिलता है। सामर्थ्य और रस से नीरसता चली जाती है। नीरस जीवन में ही अपराध, दुःख, चिंता, परेशानी होती है। अतः सज्जन को आत्मा-परमात्मा में शांत होने की व्यवस्था मिले और शांत कहीं अंतःकरण में, शांति में रुक न जाय, फिर अशांति उसको दुःख न दे इसलिए वह शांत बंधनों से मुक्त हो कि 'शांति में भी वही है, अशांति में भी वही है। वाह प्रभु ! मन अशांत हुआ, मैं उसको जानता हूँ। शरीर बीमार हुआ, मैं उसको जानता हूँ।' और फिर मुक्त पुरुष औरों को भी मुक्त करते रहें। और

महामनाः स्यात्, तद् व्रतम्।

बड़े मनवाले बनो, उदार हृदयवाले बनो - यह व्रत है।

ऋतून् न निन्देत्, तद् व्रतम्।
वर्षन्तं न निन्देत्, तद् व्रतम्।

(शेष पृष्ठ ३५ पर)

चार प्रकार के शिष्य

उत्तम शिष्य तो आध्यात्मिक प्रश्न करने की जरूरत ही नहीं समझता है, गुरु के उपदेशमात्र से, विवेक से ही उसको ज्ञान हो जाता है । मध्यम शिष्य कभी-कभार साधन-विषय का प्रश्न पूछकर बात को पा लेता है, समझ लेता है और तीसरे नम्बर का जो शिष्य है उसको बहुत सारे साधन-भजन की आवश्यकता पड़ती है । और जिसमें शिष्यत्व ही नहीं है, वह चाहे कितना बड़ा भारी तपस्वी हो, बड़ा दिखता हो लेकिन अंदर का दीया जलाने का उसके पास तेल नहीं, बत्ती नहीं ।

शिष्य होने के लिए ४ शर्तें

शिष्य होने के लिए चार शर्तें हैं । इन शर्तों पर खरा उतरनेवाला आदमी ही शिष्य हो सकता है, दूसरा नहीं । विद्या का अभिमान, धन का अभिमान, सत्ता का अभिमान, सौंदर्य आदि या अपनी विशेषता का कोई अभिमान - ये चार अभिमान अगर रहेंगे, चार में से एक भी रहेगा अथवा तो उनका कोई अंश भी रहेगा तो श्रद्धा टिकेगी नहीं । रामकृष्ण परमहंस से विवेकानंदजी ज्यादा पढ़े थे लेकिन विवेकानंद विद्या का अभिमान लेकर बैठे रहते तो रामकृष्ण की कृपा नहीं पा सकते थे । राजा जनक के पास धन और सत्ता थी, अगर उसका अंशमात्र भी अभिमान रहता तो जनक अष्टावक्रजी के इतने समर्पित शिष्य नहीं हो सकते थे ।

सद्गुरु को पाना, यह तो सौभाग्य है लेकिन उनमें श्रद्धा टिकी रहना, यह तो परम सौभाग्य है । कभी-कभार तो नजदीक रहने से उनमें देहाध्यास दिखेगा, श्रद्धा डगमगायेगी, गुरु का शरीर दिखेगा लेकिन 'शरीर होते हुए भी वे अशरीरी आत्मा हैं' - इस प्रकार का भाव दृढ़ होगा तब श्रद्धा टिकेगी, नहीं तो अपनी मति-गति के अनुसार गुरु के व्यवहार को तौलेगा । जब रजोगुण होगा तो गुरु को कुछ सोचेगा कि 'ये तो ऐसे हैं ।' सत्त्वगुण होगा तो लगेगा कि 'देव हैं, ब्रह्म हैं ।'

****

(पृष्ठ ३४ से 'दिव्य वैदिक ...' का शेष)

तपन्तं न निन्देत्, तद् व्रतम् ।
लोकान् न निन्देत्, तद् व्रतम् ।

'हाय-हाय ! बरसात..., हाय-हाय ! गर्मी...' - ऐसा करके अपना हृदय खराब मत करो । 'वाह-वाह ! कृपा बरस रही है, प्रभुजी बरस रहे हैं जल के रूप में... वाह-वाह !' अपने हृदय को परिस्थिति के अनुकूल बनाना है । अपने मन को बनाना है, भगवान को नहीं बनाना है । भगवान के पास जाना भी नहीं है, भगवान को बुलाना भी नहीं है । बुलाना तब है कि भगवान को वैकुंठवासी बोलो, दूसरी जगह मानो तो बुलाओ । तो वे भगवान तो साकार होंगे - कैलाशवासी, वैकुंठवासी, गोलोकवासी । वह भगवान की मायावी आकृति होगी । वास्तविक भगवान तो सर्वव्यापक हैं । तो भगवान को बुलाना नहीं है, बनाना नहीं है और भगवान के पास जाना भी नहीं है । केवल भगवान की सत्ता में अपनी जो ऐंठ है अपने अहं की, वह छोड़नी है । इसलिए शरणागतियोग चला ।

तमेव शरणं गच्छ सर्वभावेन भारत । (गीता : १८.६२)

भगवान के स्वभाव में अपना स्वभाव मिला दो । बरसात आती है तो 'वाह प्रभु ! वाह-वाह !!' बरसात तो आनेवाली ही है, मुँह खराब करोगे, दिल खराब करोगे तो भी बरसात तो आयेगी । 'वाह प्रभु !' करो तो आपका हृदय पवित्र होगा और प्रभुभाव से भर जायेगा । बड़े मनवाले बनो ।
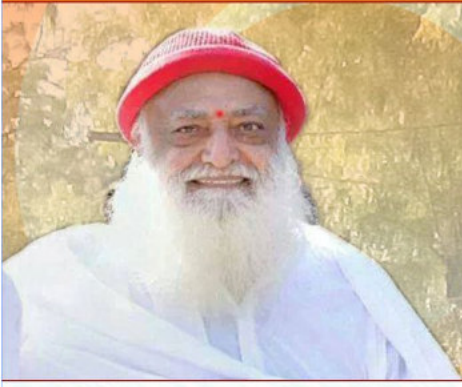
एक पुलिस उपनिरीक्षक का जेलर के नाम पत्र

आदरणीय जेलर साहब,
जोधपुर केन्द्रीय कारागृह।

सादर नमन !

अपने गुरुदेव पूज्यपाद संत श्री आशारामजी बापू के लिए रक्षासूत्र प्रेषित कर रही हूँ। कृपया उन तक रक्षासूत्र पहुँच जाय इतना कष्ट कर दीजियेगा।

मैं वर्तमान में दुर्ग (छ.ग.) के महिला थाना में उपनिरीक्षक के पद पर हूँ। सन् १९९८ में मेरा एक आई.पी.एस. अधिकारी से एक केस में गिरफ्तारी को लेकर कुछ मतभेद हुआ और मुझे जबरन घूस लेने के झूठे प्रकरण में विभाग से बरखास्त कर दिया गया। उस समय मेरे पति बीमार थे और दोनों बच्चे छोटे-छोटे थे। मुझे बहुत परेशानियों के दौर से गुजरना पड़ा। सभीने मेरा साथ छोड़ दिया था। ऐसे समय में मुझे मेरे गुरुदेव ने बचाया, सहारा दिया। मैं अपने परिवार के साथ आत्महत्या करने के महापातकी विचार तक पहुँच गयी थी।

एक दिन अचानक पूज्य बापूजी का एक स्टीकर मुझे मेरे घर पर मिला। स्टीकर पर लिखा था, 'किसी भी चीज को ईश्वर से अधिक मूल्यवान कभी मत समझो।' साथ में गुरुदेव का श्रीचित्र था। उसके बाद एक परिचित महिला कॉन्स्टेबल, जो पुलिस विभाग छोड़कर शिक्षा विभाग में है, उसने बताया कि 'बापूजी सिद्धपुरुष के रूप में ईश्वर के प्रतिरूप ही हैं। ऐसा क्या है जो उनकी कृपा से नहीं मिल सकता ? पूज्य बापूजी के अभयप्रद श्रीचरणों में सच्चे मन से कोई प्रार्थना करे तो उसकी सब पीड़ा-कष्ट दूर तथा मनोकामनाएँ पूर्ण होती हैं।' उसने मुझे बापूजी द्वारा बताये गये पूजा-पाठ के जो नियम बताये, मैंने उन्हें करना शुरू कर दिया।

२००५ में मेरे पूरे परिवार ने बापूजी से दीक्षा ले ली। उसके बाद बापूजी की ही कृपा से मैं १५ साल तक विभाग से कानूनी लड़ाई लड़ती रही और सितम्बर २०१३ को बिलासपुर (छ.ग.) हाईकोर्ट के आदेश पर पुनः महिला थाना, दुर्ग में पदस्थ हुई हूँ। वर्तमान में मेरे पति का स्वास्थ्य ठीक है। बेटा इंजीनियर की डिग्री ले चुका है। हमारा जीवन सुखी है। आज हम जीवित हैं तो गुरुकृपा से ही हैं। मैंने अपने गुरुदेव को कई बार सत्संग के माध्यम से जाना है, वे अलौकिक महापुरुष हैं। उन्हें समझ पाना मेरी बुद्धि एवं ज्ञान से परे है। मुझे दुःख है कि मैं दो वर्ष से न गुरुदेव के दर्शन कर पायी और न ही प्रत्यक्ष रूप से सत्संग सुन पायी हूँ।

महोदय !

यदि आपको किसी कानूनी प्रक्रिया से गुजरना न पड़े तो मेरे द्वारा भेजा गया रक्षासूत्र गुरुदेव तक पहुँचाने की कृपा करें। इस समय हम सब साधक भाई-बहनें, हमारे गुरुदेव को निर्दोष होने के बावजूद जो कष्ट सहना पड़ रहा है, उसको लेकर बहुत व्यथित हैं। यदि आप किसी तरह से उनका आशीर्वाद मुझ तक पहुँचाने की कृपा करेंगे तो मैं जीवनभर आपकी आभारी रहूँगी।

- रमा कोष्ठी (उपनिरीक्षक)
महिला थाना, दुर्ग (छ.ग.)

बल्य रसायन

यह चूर्ण शरीर की समस्त धातुओं का पोषण करते हुए शरीर को हृष्ट-पुष्ट बनाता है । स्वप्नदोष, शुक्राणुओं की कमी, कमरदर्द, शारीरिक कमजोरी आदि में लाभदायी है। इसके नियमित सेवन से शरीर में शक्ति का संचार होता है।

रसायन टेबलेट

आयुर्वेद के अनुसार ४० साल की उम्र के बाद निरोगता एवं दीर्घ आयुष्य के लिए रसायन का सेवन करना चाहिए। यह शक्ति, स्फूर्ति व ताजगी देनेवाला, रोगों का नाशक एवं वृद्धावस्था को दूर रखनेवाला है। यह जीर्णज्वर, वीर्यदोष, मूत्र-संबंधी विकार, स्वप्नदोष में अत्यंत लाभदायी है। बढ़ती उम्र के साथ आनेवाली कमजोरी एवं बीमारियों से यह रक्षा करता है।

नीम, तुलसी, मुलतानी हर्बल साबुन

मुलतानी मिट्टी रोमकूप खोलती है एवं त्वचा को सुंदर व सुकोमल बनाकर ठंडक पहुँचाती है। तुलसी व नीम रोगप्रतिकारक तथा त्वचा के रोगों में लाभदायक हैं।

घृतकुमारी (ग्वारपाठा) एवं नींबूयुक्त यह साबुन सौंदर्य व कांति में निखार लाता है । रोमकूपों को स्वच्छ कर त्वचा को मुलायम बनाता है। चेहरे के कील-मुँहासे व दाग-धब्बों के लिए विशेष उपयोगी है।

(प्राप्ति-स्थान : सभी संत श्री आशारामजी आश्रम व समितियों के सेवाकेन्द्र।)

गुरुपूर्णिमा के पावन अवसर पर सुप्रचार-सेवा प्रशिक्षण शिविर

देशसेवा, गुरुसेवा एवं **'ऋषि प्रसाद'** के दैवी कार्य में लगे सभी पुण्यात्माओं व गुरुभक्तों को गुरुपूर्णिमा के पावन पर्व पर विशेष आमंत्रण !

गुरु-शिष्य परम्परा का सबसे बड़ा पर्व है गुरुपूर्णिमा । इस दिन हर शिष्य अपने गुरुदेव के श्रीचरणों में सेवा-साधना व श्रद्धा-विश्वास रूपी पुष्प अर्पण करता है, साथ ही नये उत्साह के साथ सेवा-साधना का नया संकल्प भी लेता है।

हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी अहमदाबाद आश्रम में गुरुपूर्णिमा पर्व मनाया जायेगा। जैसा कि हम सभी जानते हैं कि पूज्य बापूजी व आश्रमों के विरुद्ध एक गहरा षड्यंत्र चल रहा है और मीडिया का एक बड़ा तबका लोगों से सच्चाई छुपाकर कुप्रचार करके इस षड्यंत्र का हिस्सा बना हुआ है। अतः आज आवश्यकता है कि हम सभी एकजुट होकर इस षड्यंत्र का पर्दाफाश करते हुए जन-जन तक सच्चाई को पहुँचायें। इस उद्देश्य से दिनांक १ अगस्त २०१५ को अहमदाबाद आश्रम में सुबह १० बजे से 'सुप्रचार-सेवा प्रशिक्षण शिविर' व 'अखिल भारतीय ऋषि प्रसाद सेवादार सम्मेलन' का आयोजन किया गया है। इसमें अनुभवी साधकों तथा समाज-सेवकों द्वारा प्रशिक्षण दिया जायेगा। सम्मेलन के दौरान देश, धर्म और गुरु की सेवा के इस भगीरथ कार्य में उत्तम योगदान देनेवाले पुण्यात्माओं को पुरस्कृत भी किया जायेगा। सभी साधक, ऋषि प्रसाद सेवाधारी एवं समाजसेवी इसमें भाग ले सकते हैं।

→

परिवारसहित आत्महत्या का सोचनेवाली, झूठे कानूनों के कीचड़ में फँसी देवी ने स्टीकर पाकर सपरिवार आत्महत्या का विचार छोड़कर अपनी लौकिक उन्नति तो देखी ही, साथ ही आध्यात्मिक उन्नति की भी धनी बनी।

ऐसे अनेक लोगों के अनुभव हैं जो स्थानाभाव के कारण हम प्रकाशित नहीं कर पाते। - श्री इन्द्र सिंह राजपूत

पाचन-संस्थान के रोगों का एक्यूप्रेशर द्वारा इलाज

पाचन-संस्थान हमारे शरीर का अति महत्त्वपूर्ण संस्थान है। इसके द्वारा ही भोजन पचकर शरीर को शक्ति एवं ऊर्जा प्राप्त होती है। पाचन की प्रक्रिया में अनेक प्रमुख अवयव एवं अंतःस्रावी ग्रंथियों का सक्रिय योगदान रहता है।

स्वस्थ रहने के लिए इसकी कार्यविधि का नियमन एवं व्यवस्थित होना बहुत आवश्यक है। यहाँ पर पाचन-संस्थान की विभिन्न व्याधियों में लाभकारी एक्यूप्रेशर के बिंदुओं की जानकारी दी जा रही है।

कब्जियत

* दोनों हाथों के अँगूठे और पहली उँगली के बीचवाले मांसल भाग पर दबाव दें। (चित्र १)

(चित्र १)

* दोनों पैरों पर चित्र २ में दर्शाये गये भाग पर मालिश करते हुए दबाव दें।
* नाभि से चार अंगुल नीचे दबाव दें। (चित्र ३ में बिंदु 'अ')

(चित्र २)

(चित्र ३)

* सीधा लेटकर नाभि से थोड़ा नीचे बायीं ओर पेट पर उँगलियों से कुछ सेकंड के लिए तीन बार गहरा दबाव देने के बाद शौच जायें। (चित्र ३ में बिंदु 'ब')
* हाथों की कोहनियों को पूरा मोड़ देने से उन पर बाहर की ओर जो सिलवट आती है, उस पर चित्र ४ में दर्शाये गये बिंदु पर बारी-बारी से दबाव दें।

उक्त चित्रों में दर्शाये गये बिंदुओं पर ५ से १० सेकंड तक दबाव दें, फिर छोड़ दें, फिर दबाव दें - ऐसा २ से ३ मिनट तक दिन में ३ बार करें।

(चित्र ४)

सावधानी : भोजन के करीब डेढ़ घंटे बाद बिंदुओं पर दबाव दें। कोई भी एक्यूप्रेशर बिंदु भोजन के तुरंत बाद नहीं दबाना चाहिए। गर्भिणी महिलाएँ एक्यूप्रेशर न करवायें।

इसके साथ ही आहार में रेशातत्त्वों (हरी पत्तेदार सब्जियाँ, चोकरयुक्त आटा, ताजे फल) व तरल पदार्थों का सेवन अधिक मात्रा में करें। भोजन अच्छी तरह चबा-चबाकर निश्चित समय पर करें। भोजन के बीच में तथा भोजन के एक-डेढ़ घंटे बाद गर्म पानी पीने से कब्ज में बहुत लाभ होता है।

आलू, चावल, मैदे से बनी वस्तुएँ, अधिक तले-मसालेदार पदार्थ आदि से परहेज रखें। बिना भूख के खाना, बार-बार खाना, जरूरत से अधिक मात्रा में खाना, असमय खाना (खासकर देर रात को) आदि से कब्जियत होती है, अतः इनसे बचें। सूर्योदय के बाद तक सोते रहने से आँतों में पड़े द्रव्यांश कम होने लगते हैं, जिससे मल सूख जाता है। मल को रोककर रखना भी कब्जियत का कारण है। शारीरिक परिश्रम या व्यायाम नियमित करें। कब्ज होने पर रात में सोने से पहले गर्म पानी से ३ से ५ ग्राम त्रिफला या छोटी हरड़ का चूर्ण लें। रात का रखा हुआ आधा लीटर पानी सुबह गुनगुना करके सूर्योदय से पूर्व बासी मुँह पीने से पेट साफ करने में मदद मिलती है। बवासीर का मुख्य कारण कब्जियत है, अतः बवासीर के उपचार के लिए भी इन बिंदुओं पर दबाव दिया जाता है।

(पाचन-संस्थान के अन्य अवयवों के एक्यूप्रेशर बिंदुओं को जानने हेतु पढ़ें आगामी अंक)

स्वास्थ्य के लिए परम हितकारी : पीपल

पीपल के सभी अंग उपयोगी व अनेक औषधीय गुणों से भरपूर हैं। जहाँ एक ओर यह वृक्ष आध्यात्मिक और धार्मिक महत्त्व रखता है, वहीं दूसरी ओर आयुर्वेदिक और आर्थिक तौर पर भी महत्त्वपूर्ण है। पीपल में भगवद्भाव रखकर जल चढ़ाने तथा परिक्रमा करने से आध्यात्मिक लाभ के साथ स्वास्थ्य-लाभ सहज में ही मिल जाता है। पीपल शीत, कफ-पित्तशामक, रक्तशुद्धिकर व घाव ठीक करनेवाला है। यह मेध्य, हृदयपोषक व बल-वीर्यवर्धक है।

पीपल के औषधीय उपयोग

वातरक्त (गाउट) : प्रोटीन्स के अत्यधिक सेवन से शरीर में यूरिक एसिड की मात्रा बढ़ जाती है, जिससे वातरक्त हो जाता है। इसमें शरीर के सभी जोड़ों में दर्द व सूजन हो जाती है। २० ग्राम पीपल की जड़ की छाल ३२० मि.ली. पानी में डालकर उबालें। चौथाई पानी शेष रह जाने पर उस काढ़े को गुनगुना होने दें। १ चम्मच शहद के साथ उसे पीने से गम्भीर वातरक्त भी ठीक हो जाता है।

खूनी बवासीर : पीपल के फलों को सुखाकर चूर्ण बना लें। एक चम्मच चूर्ण का १० मि.ली. आँवला रस व १० मि.ली. शहद के साथ दिन में २ बार सेवन करें।

रक्तपित्त : पीपल के फल का चूर्ण व मिश्री समभाग मिला के रख लें। १-१ चम्मच चूर्ण दिन में ३ बार पानी के साथ लें।

घाव : पीपल के हाल ही में गिरे हुए सूखे पत्तों का चूर्ण लगाने से घाव जल्दी भर जाता है।

सिरदर्द व जुकाम : पीपल के चार कोमल पत्ते चबा-चबाकर उनका रस चूसें तथा बाद में पत्तों को थूक दें। दिन में २-३ बार ऐसा करने से कफ-पित्तजन्य सिरदर्द ठीक हो जाता है। यह जुकाम में भी उपयोगी है।

धातु-दौर्बल्य व मासिक धर्म के विकार : छाया में सुखाये गये पीपल के फलों का चौथाई चम्मच चूर्ण १ गिलास गुनगुने दूध में मिलाकर रोज पीने से धातु-दौर्बल्य दूर होता है। स्त्रियों का पुराना प्रदर-रोग और मासिक की अनियमितता दूर हो जाती है। इससे कब्ज में भी लाभ होता है।

कब्जनाशक प्रयोग : पीपल के सूखे फल, छोटी हरड़ व सौंफ समभाग मिलाकर पीस के रखें। ३ से ५ ग्राम चूर्ण रात को गुनगुने पानी से लेने से कब्ज दूर होता है।

पेट के रोग : ५-५ ग्राम पीपल के पके हुए सूखे फल, छोटी हरड़, सौंफ और १५ ग्राम मिश्री - सबको पीसकर चूर्ण बना लें। रात को सोते समय ३ ग्राम चूर्ण गुनगुने पानी से लें। इससे जठराग्नि प्रदीप्त होती है, मल साफ आता है व पेट के कई रोग शांत होते हैं।

फोड़ा, बालतोड़ : पीपल के दूध का फाहा फोड़े या बालतोड़ पर लगाने से वह कुछ ही दिनों में सूख

जाता है।

हृदयरोग : ३ ग्राम पीपल के फल का चूर्ण दूध के साथ सेवन करने से कुछ ही दिनों में हृदयरोग में लाभ होता है।

हृदय व दमा रोगियों के लिए विशेष प्रयोग

पीपल के पत्तों में हृदय को बल और आरोग्य देने की अद्भुत क्षमता है। पीपल के १५ हरे कोमल पत्ते, जो पूरी तरह विकसित हों, उनका ऊपरी व नीचे का कुछ भाग काट दें। पत्तों को धोकर एक गिलास पानी में धीमी आँच पर पकने दें। पानी आधा शेष रहने पर छान के पियें। इस पेय को हृदयाघात के बाद १५ दिन तक सुबह-शाम लगातार लेने से हृदय पुनः स्वस्थ हो जाता है।

पीपल के सूखे पत्तों को जलाकर उनकी ५ ग्राम राख को सुबह शहद के साथ ४० दिन तक लेने से दमे में लाभ होता है। ऊपर बतायी गयी विधि से बनाया गया पेय दमा के रोगियों के लिए भी खूब लाभदायी है।

****

(पृष्ठ ४१ का शेष) बारडोली व जामनगर (गुज.) में गरीबों में भंडारा किया गया। श्रीपाली भाटेल जि. कालाहांडी (ओड़िशा) में गरीबों में चप्पलें बाँटी गयीं। अहमदाबाद, इंदौर आदि स्थानों पर अनाज-वितरण हुआ। बरेली (उ.प्र.) के महिला शरणालय में फल व सत्साहित्य वितरण हुआ। अहमदाबाद, लुधियाना (पंजाब), गड़चिरोली (महा.) में शरबत-वितरण तथा जालंधर (पंजाब), भावनगर (गुज.) में भी सेवाकार्य किया गया।

संत-सम्मेलन एवं साधक-सम्मेलन

२४ मई को जोधपुर में विशाल 'राष्ट्र जागृति संत-सम्मेलन' हुआ। इसमें उपस्थित विभिन्न संतों, संगठनों के प्रमुखों, मान्यवरों तथा हजारों साधकों व संस्कृतिप्रेमियों ने पूज्य बापूजी के साथ हो रहे षड्यंत्र का विरोध करते हुए उनकी शीघ्र रिहाई की माँग की। २४ मई को ही रविवारी सप्तमी के योग पर अहमदाबाद आश्रम में जपमाला-पूजन व साधक-सम्मेलन का आयोजन हुआ। साधकों ने षड्यंत्र की सच्चाई घर-घर पहुँचाने का संकल्प लिया।

ऋषि प्रसाद सम्मेलन

साधकों के मार्गदर्शन एवं सेवाकार्यों को और व्यापक करने हेतु देशभर में 'ऋषि प्रसाद सम्मेलनों' का आयोजन हो रहा है। बेंगलुरु, कलबुर्गी (कर्नाटक), अम्बाला, फरीदाबाद, गुड़गाँव (हरि.), भेटासी, बड़ौदा (गुज.), अलीगढ़, मेरठ, आगरा, बरेली (उ.प्र.), बिलासपुर (हि.प्र.), ग्वालियर (म.प्र.), दिल्ली, हैदराबाद, कोलकाता, केशवपुरम-दिल्ली, चंडीगढ़, जम्मू, इंदौर आदि अनेक स्थानों पर 'ऋषि प्रसाद सम्मेलन' आयोजित हुए।

निष्काम कर्म करने में जिन्हें आनंद नहीं आता, वे बेचारे अपनी कामनापूर्ति के चक्कर में चौरासी के चक्कर चलते ही रहते हैं।

जैसे गोमुख से निकलनेवाली गंगा अपने मार्ग में आनेवाली असंख्य चट्टानों, पर्वतों रूपी अवरोधों को सहते हुए प्राणियों को जल, शीतलता, पवित्रता प्रदान करती रहती है, वैसे ही षड्यंत्रकारियों द्वारा उत्पन्न किये गये असंख्य अवरोधों, विघ्नों, कष्टों को सहते हुए करुणासिंधु पूज्य बापूजी का 'बहुजनहिताय-बहुजनसुखाय' सेवा-प्रकल्प चलाने का मंगल स्वभाव अभी भी साफ दिखाई देता है।

गर्मी की छुट्टियों में विद्यार्थी हो रहे संस्कारित

छात्रों के हितैषी पूज्य बापूजी की प्रेरणा से हर साल की तरह इस बार भी गर्मी की छुट्टियों में आश्रमों व समितियों द्वारा भारतभर में 'विद्यार्थी उज्ज्वल भविष्य निर्माण शिविरों' का आयोजन हुआ। इनके द्वारा अभी तक लाखों विद्यार्थी लाभान्वित हो चुके हैं। इन शिविरों में सत्संग, खेल, प्रतियोगिताओं आदि द्वारा नैतिक व आध्यात्मिक शिक्षा दी जाती है। आदर्श दिनचर्या, संध्या, ध्यान, सूर्योपासना, जप, योगासन आदि के माध्यम से विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास किया जाता है।

जोधपुर में भी ५ दिवसीय शिविर का आयोजन हुआ। संत-सम्मेलन में संतों द्वारा विद्यार्थियों को पुरस्कृत किया गया।

विविध सेवाकार्य

मोखड़ा जि. झाबुआ (म.प्र.) में अनाज व नकद राशि का वितरण तथा भंडारा हुआ। अलीराजपुर व सुसनेर जि. आगर-मालवा (म.प्र.),

(शेष पृष्ठ ४० पर)

नेपाल भूकम्प-पीड़ितों के लिए बापूजी ने भिजवायी राहत-सामग्री

नेपाल में आये विनाशकारी भूकम्प से भारी जानमाल की तबाही हुई - यह सुनकर करुणासिंधु पूज्य बापूजी को बहुत पीड़ा हुई और तुरंत पूज्यश्री ने आज्ञा की : ''सेवाधारी तत्परता व जोर-शोर से राहत-सेवाकार्य में लग जायें। लोगों की सेवा में किसी प्रकार की कमी न रहने दें।'' पूज्यश्री के सेवाभावी साधक बड़ी तत्परता से राहत-सेवा में लग गये। भूकम्प के भयंकर झटके व बारिश भी उन्हें डिगा नहीं पायी। आश्रम द्वारा कपड़े, कच्चा राशन, सब्जियाँ, बिस्कुट, नमकीन, पानी की बोतलें व पाउच, टेंट (अस्थायी निवास हेतु तम्बू), बर्तन आदि राहत-सामग्री से भरे ट्रकों के साथ दवाइयाँ तथा सेवाधारियों व चिकित्सकों के दल भी भेजे गये।

भूकम्प-पीड़ित इलाकों में कई स्थान ऐसे हैं जहाँ आसानी से नहीं पहुँचा जा सकता है। उन पहाड़ियों के ऊपर बसे गाँवों में पूरे मकान ध्वस्त हो चुके हैं। वहाँ भी साधकों ने पहुँचकर राहत-सामग्री पहुँचायी। काठमांडू से २५ कि.मी. दूर धर्मस्थली-माहाकाल में भी राहत-सामग्री पहुँचायी गयी। सबसे ज्यादा क्षतिग्रस्त सिंधुपाल्चौक जिले के भिमटार, पीपलटार क्षेत्र में राहतकार्य चालू हैं। भूकम्प से ज्यादा प्रभावित अन्य इलाके आमटार, सिपा पोखरे, धोतर आदि में आश्रम द्वारा अन्नक्षेत्र चलाये जा रहे हैं, जिनमें हजारों लोग भोजन कर रहे हैं। इन इलाकों में हजारों परिवारों को रहने हेतु तिरपाल बाँटे गये। बच्चों को स्कूल बैग एवं ठंडा पानी रखने की बोतलें (थर्मस) व अन्य आवश्यक वस्तुएँ बाँटी गयीं। इस विषम परिस्थिति में वहाँ के लोग हताश-निराश हो गये हैं। ऐसे में बापूजी द्वारा बतायी गयी अनोखी युक्ति - सर्वदुःखहारी, प्राणबल भरनेवाला भगवन्नाम-जप व संकीर्तन कराया जा रहा है। बच्चों को एकत्रित करके 'बाल संस्कार केन्द्र'

चलाया जा रहा है। कीर्तनयात्रा और प्रभातफेरियाँ भी निकाली जाती हैं। आपदाग्रस्त लोगों को धैर्य, साहस एवं ईश्वर-विश्वास बनाये रखने की प्रेरणा एवं सांत्वना दी जा रही है।

नेपाल में दूसरी बार आये भूकम्प के झटकों से क्षतिग्रस्त इलाकों में भी पूज्य बापूजी ने राहत-सामग्री भिजवायी तथा मीडियाकर्मियों से बातचीत के दौरान १४ मई को कहा : ''मैं तो चाहता हूँ केवल दो दिन के लिए नेपाल चला जाऊँ नेपालवालों की सेवा करने के लिए।''

भूकम्प से अत्यधिक प्रभावित दोलखा जिले में अस्थायी निवास बनाने हेतु हजारों वॉटरप्रूफ तम्बू (टेंट) तथा बाँस आदि का सामान ट्रकों द्वारा लगातार भेजा जा रहा है। साथ में खाने-पीने का सामान, मिठाई, बर्तन आदि भी लगातार भेजे जा रहे हैं। दोलखा से ४० कि.मी. दूर (चीन की सीमारेखा के पास) सुनखानी नामक गाँव में भी राहतकार्य चालू हैं। जिनके घर गिर गये हैं उन्हें भी आश्रम की तरफ से वॉटरप्रूफ टेंट के अस्थायी घर बनाकर दिये जा रहे हैं।

*****

ऋषि प्रसाद प्रश्नोत्तरी

नीचे दिये गये रिक्त स्थानों की पूर्ति करने के लिए इस अंक को ध्यानपूर्वक पढ़िये। उत्तर अगले अंक में प्रकाशित किये जायेंगे।

(१) धनभागी हैं वे लोग, जिन्हें .... गुरुओं का ज्ञान मिल जाता है !

(२) ईश्वर मिलेगा तो .... की निवृत्ति से ही मिलेगा।

(३) यदि संत न होते तो ...... कोई नहीं जानता।

*****

पिछले अंक की 'ऋषि प्रसाद प्रश्नोत्तरी' के उत्तर

(१) सुनिश्चित, सुस्थिर (२) सूर्योदय (३) उपवास (४) कुम्हड़ा (५) सीताजी

*****

पिछले अंक की 'बुद्धि की कसरत' वर्ग-पहेली के उत्तर

(१) रस (२) भीम (३) सोमनाथ (४) हलाहल विष (५) जिह्वा (६) संत-संग (७) ब्रह्मलोक

विशेष फलदायी पुरुषोत्तम मास

(पुरुषोत्तम/अधिक मास : १७ जून से १६ जुलाई)

पुरुषोत्तम मास में जो जप, सत्संग, ध्यान, पुण्य आदि करेंगे, उन्हें विशेष फायदा होगा। अंतर्यामी आत्मा के लिए जो भी कर्म करेंगे, वह विशेष फलदायी हो जायेगा। 'देवी भागवत' के अनुसार यदि दान आदि का सामर्थ्य न हो तो संतों-महापुरुषों की सेवा (उनके दैवी कार्यों में सहभागी होना) सर्वोत्तम है। इससे तीर्थ, तप आदि के समान फल प्राप्त होता है।

(विस्तृत लेख पढ़ें ऋषि प्रसाद, मई २०१५)

‘विद्यार्थी उज्ज्वल भविष्य निर्माण शिविरों’ द्वारा अद्भुत शारीरिक, मानसिक व बौद्धिक लाभ पाते नौनिहाल

अहमदाबाद | सूरत | रायपुर (छ.ग.) | लड्डूगाँव, जि. कालाहांडी (ओड़िशा)

प्रकाशा (महा.) | नासिक | अमरावती (महा.) | बाड़मेर (राज.)

सम्बलपुर (ओड़िशा) | राजनांदगाँव (छ.ग.) | छतरपुर (म.प्र.) | खीमराणा, जि. जामनगर (गुज.)

छिंदवाड़ा (म.प्र.) | सिल्लेवाड़ा, जि. नागपुर (महा.) | इंदौर | बड़गाँव, जि. खरगोन (म.प्र.)

दोंडाईचा (महा.) | वरली-मुंबई | बैतूल (म.प्र.) | दाहोद (गुज.)

ओंजल, जि. नवसारी (गुज.) | सागर (म.प्र.) | पटियाला (पंजाब) | अमलनेर, जि. जलगाँव (महा.)

भावनगर (गुज.) | खड़गपुर (प.बंगाल) | बड़ौदा (गुज.) | सरोरा, जि. जम्मू

विभिन्न शहरों के विद्यालयों में हो रहे ‘योग व उच्च संस्कार शिक्षा कार्यक्रमों’ से लाभान्वित होते विद्यार्थी

स्थानाभाव के कारण सभी तस्वीरें नहीं दे पा रहे हैं। अन्य अनेक तस्वीरों हेतु वेबसाइट www.ashram.org/sewa देखें।

आश्रम, समितियाँ एवं साधक परिवार अपने सेवाकार्यों की तस्वीरें sewa@ashram.org पर ई-मेल करें।

RNP. No. GAMC 1132/2015-17
(Issued by SSPOs Ahd, valid upto 31-12-2017)
Licence to Post without Pre-payment.
WPP No. 08/15-17
(Issued by CPMG UK. valid upto 31-12-2017)
RNI No. 48873/91
DL (C)-01/1130/2015-17
WPP LIC No. U (C)-232/2015-17
MNW-57/2015-17
'D' No. MR/TECH/47.6/2015
Date of Publication: 1st June 2015

"पूज्य बापूजी को शीघ्र जमानत दी जाय"

जोधपुर में हुए संत-सम्मेलन में देशभर से आये संतों, संगठन-प्रमुखों एवं विशाल जनसमुदाय ने की अपील

नेपाल भूकम्प-पीड़ितों के लिए पूज्य बापूजी ने भिजवायी राहत-सामग्री

नेपाल में भूकम्प-पीड़ितों की मदद हेतु पूज्य बापूजी के निर्देश पर कपड़े, कच्चा राशन, सब्जियाँ, बिस्कुट, नमकीन, पानी की बोतलें व पाउच, तिरपाल, वॉटरप्रूफ टेंट, बर्तन आदि राहत-सामग्री से भरे ट्रकों के साथ दवाइयाँ तथा सेवाधारियों व चिकित्सकों के दल भी भेजे गये। प्रभावित क्षेत्रों में जगह-जगह पर अन्नक्षेत्र, सहायता व चिकित्सा केन्द्र, बाल संस्कार केन्द्र आदि चलाये जा रहे हैं। सर्वशांति यात्राएँ निकाली जा रही हैं।

साधकों द्वारा षड्यंत्र की पोल खोलनेवाला ऋषि प्रसाद विशेषांक प्राप्त कर प्रसन्नता व्यक्त करती गणमान्य हस्तियाँ व आम जनता

विजय गोयल सांसद | मीनाक्षी लेखी सांसद | रविन्द्र गुप्ता महापौर, उत्तरी दिल्ली | विजेन्द्र गुप्ता विपक्ष नेता, दिल्ली विधानसभा | प्रवेश वर्मा सांसद | रेखा गुप्ता, महासचिव दिल्ली प्रदेश, भाजपा | सतीश उपाध्याय भाजपा अध्यक्ष, दिल्ली

स्थानाभाव के कारण सभी तस्वीरें नहीं दे पा रहे हैं। अन्य अनेक तस्वीरों हेतु वेबसाइट www.ashram.org/sewa देखें।

Posting at Dehradun G.P.O. between 1st to 17th of every month. * Posting at N.D.P.S.O on 10th & 11th of E.M. * Posting at MBI Patrika Channel on 24th & 25th of E.M.